लखनऊ, बुधवार, 19 अप्रैल 2023 | Email: starexpressnews@gmail.com | वर्ष : 16 अंक : 56 | पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रूपया

हिन्दी दैनिक/डिजिटल

स्टार एक्सप्रेस

सोच..... बदलते भारत की

www.starexpress.news

संक्षिप्त समाचार

जदयू ने जातीय जनगणना पर राहुल गांधी के रुख का समर्थन किया

(एजेंसी) पटना । बिहार में जब एनडीए की सरकार थी तब राज्य में जाति आधारित जनगणना कराने का निर्णय लिया गया था। राज्य में दूसरे चरण की जातीय जनगणना का कार्य चल भी रहा है। इस बीच, कांग्रेस के नेता राहुल गांधी ने भी राष्ट्रीय स्तर पर जाति आधारित जनगणना कराने की बात रखी है। राहुल की मांग का जदयू ने भी समर्थन किया है। जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी ने जाति आधारित जनगणना का समर्थन किया है, जो सामाजिक न्याय की दिशा में एक सही कदम है और इसका स्वागत है। जनता दल (यूनाइटेड) और हमारे नेता नीतीश कुमार की तरफसे इसकी मांग वर्षों से होती रही है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने बिहार में जातीय गणना कराने का निर्णय लिया, जिसमें भाजपा जानबूझ कर देर करती रही, लेकिन मुख्यमंत्री के स्पष्ट निर्णय के सामने भाजपा को झुकना पड़ा और गणना हो रही है। उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री बिहार की कई जनहितकारी योजनाओं को अपने राष्ट्रीय योजनाओं में शामिल किया है।

पीएम मोदी 20 अप्रैल को पहले वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन का करेंगे उद्घाटन

(एजेंसी) नई दिल्ली। संस्कृति और पर्यटन मंत्री जी. किशन रेड्डी ने सोमवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 20 अप्रैल को राष्ट्रीय राजधानी में पहले वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। संस्कृति मंत्रालय अपने अनुदेयी बॉडी अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (इंटरनेशनल बुद्धिस्ट कॉन्फेडरेशन- आईबीसी) के सहयोग से 20-21 अप्रैल को अशोक होटल में वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन (जीबीएस) की मेजबानी करेगा। मंत्री जी. किशन रेड्डी ने पत्रकारों से कहा कि पहली बार विभिन्न देशों के प्रमुख बौद्ध भिक्षु भारत आएंगे और शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। उन्होंने कहा कि शिखर सम्मेलन में इस बात पर चर्चा होगी कि बौद्ध दर्शन और विचार की मदद से समकालीन चुनौतियों से कैसे निपटा जाए। वैश्विक शिखर सम्मेलन बौद्ध धर्म में भारत के महत्व और महत्व को चिह्नित करेगा, क्योंकि बौद्ध धर्म देश में जन्मा था। मंत्री ने यह भी कहा कि दो दिवसीय शिखर सम्मेलन का विषय श्समकालीन चुनौतियों का जवाब-अभ्यास के लिए दर्शन है।

हिमाचल के चार दिन के प्रवास पर शिमला पहुंची राष्ट्रपति मुर्मू

(एजेंसी) शिमला। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज हिमाचल के चार दिवसीय प्रवास पर शिमला पहुंच गई हैं। वह छराबड़ा स्थित कल्याणी हैलीपैड पर हैलीकॉप्टर से हिमाचल प्रवास पर पहुंची। राष्ट्रपति शिमला के निकट मशोबरा स्थित राष्ट्रपति निवास रिट्रीट में ठहरी हैं। राष्ट्रपति के प्रवास को लेकर रिट्रीट से लेकर प्रदेश विश्वविद्यालय तक सुरक्षा के कड़े प्रबंध किए गए हैं। जिला प्रशासन ने राष्ट्रपति के दौरे के दृष्टिगत आम लोगों के लिए बाकायदा एडवाइजरी भी जारी की है। राष्ट्रपति के दौरे के दृष्टिगत 19 अप्रैल को कैनेडी चौक से बालुगंज सड़क यातायात के लिए बंद रहेगी। उपायुक्त शिमला की ओर से जारी आदेशों के अनुसार इस सड़क पर सुबह 10 बजे से सांय 5 बजे तक सभी प्रकार के वाहनों का यातायात बंद रहेगा। आपातकाल वाहनों पर ये नियम लागू नहीं होंगे। द्रौपदी मुर्मू राष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार शिमला प्रवास पर पहुंची हैं। शिमला पहुंचने के एक दिन बाद कल 19 अप्रैल को वह प्रदेश विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बतौर मुख्यातिथि शिरकत करेंगी।

यूपी की कानून व्यवस्था पहले बदतर थी, अब कानून का राज : योगी

❑ **अतीक-अशरफ हत्याकांड : पुलिस पर उठ रहे सवाल, पत्रकारवार्ता क्यों कराई पुलिस ने**

❑ **अशरफ के साले सद्दाम पर पचास हजार का इनाम, एसटीएफ कर रही है तलाश**

(संवाददाता)

लखनऊ । उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पी.एम. मित्र मेगा टेक्सटाइल पार्क की स्थापना होने जा रही है। पी.एम. मित्र मेगा टेक्सटाइल पार्क की स्थापना हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार के मध्य सम्पादित होने वाले एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर कार्यक्रम लोक भवन सभागार में आयोजित किया गया है। इस दौरान सीएम योगी ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 2017 से पहले उत्तर प्रदेश कहा जाता था कि जहां अंधेरा शुरु होता है वहां से उत्तर प्रदेश शुरु हो जाता है। उन्होंने कहा कि इस कलंक को भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने मिटा दिया है। उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश के 75 जिलों के गांव में स्ट्रीट लाइट्स जगमगाती हैं। उन्होंने कहा कि जिस वस्त्र उद्योग से उत्तर प्रदेश की पहचान थी उस उद्योग के लिए पीएम मित्र योजना की शुरुआत की गई है। उन्होंनेघ्घ् इस योजना के लिए पीएम मोदी का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने उत्तर प्रदेश के पुरातन गौरव को लौटाने का काम किया है। योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश कृषि प्रधान राज्य रहा है। यहां की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर रहती है। कृषि के बाद वस्त्र उद्योग से बड़ी निर्भरता है। उन्होंने कहा कि लखनऊ की चिकनकारी, भदोही का कारपेट उद्योग है। कानपुर वस्त्र उद्योग का हब होता था। कानपुर प्रदेश नहीं देश का महत्वपूर्ण शहर था। एक ऐसा समय आया जब कानपुर के उद्योग बंद होते गये..हैंडलूम सेक्टर भी बंद हो गया। उन्होंने कहा कि विगत नौ वर्षो मे देश ने प्रगति की है। इन्वेस्टर सम्मिट मे उत्तरप्रदेश ने निवेश के बड़े प्रस्ताव प्राप्त हुए। उत्तरप्रदेश आगे जल्दी ही निवेश प्रस्तावो में से दस लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावो को धरातल पर उतारने के लिए ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी करेगी। योगी ने कहा कि निवेशकों को राज्य सरकार हर जरूरत पुरी करने का कार्य कर रही है।

अतीक-अशरफ की हत्या की जांच के लिए समिति की मांग पर सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट सहमत

(एजेंसी) नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट गैंगस्टर से नेता बने अतीक अहमद और उसके भाई अशरफकी हत्या की जांच की मांग वाली याचिका पर मंगलवार को सुनवाई के लिए तैयार हो गया। याचिका में हत्याओं की जांच के लिए शीर्ष अदालत के एक पूर्व न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति गठित करने का निर्देश देने की मांग की गई थी। मामले को 24 अप्रैल को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा। अधिवक्ता विशाल तिवारी ने एक स्वतंत्र विशेषज्ञ समिति की मांग करते हुए शीर्ष अदालत का रुख किया और 2017 के बाद से उत्तर प्रदेश में हुई 183 मुठभेड़ों की जांच की भी मांग की। अहमद और उनके भाई को तीन हमलावरों ने पत्रकारों के रूप में गोली मार दी थी, जब पुलिस कर्मियों द्वारा उन्हें उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में एक मेडिकल कॉलेज में शनिवार की रात जांच के लिए ले जाया जा रहा था। याचिका में सुप्रीम कोर्ट के एक पूर्व न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक स्वतंत्र विशेषज्ञ समिति का गठन करके कानून के शासन की रक्षा के लिए दिशा-निर्देश मांगा गया था और 2017 के बाद से हुई 183 मुठभेड़ों की जांच के लिए भी कहा गया था, जैसा कि उत्तर प्रदेश के विशेष पुलिस महानिदेशक (कानून) ने कहा था। याचिकाकर्ता ने पुलिस हिरासत में अहमद और उसके भाई की हत्या की जांच की भी मांग की और जोर देकर कहा कि पुलिस द्वारा इस तरह की हरकतें लोकतंत्र और कानून के शासन के लिए एक गंभीर खतरा हैं और पुलिस राज्य की ओर ले जाती हैं।

बिल्डिंग गिरने से 4 प्रवासी मजदूरों की मौत, 20 घायल

(एजेंसी)

करनाल। अलसुबह तरावड़ी रेलवे फ्लाईओवर के नजदीक स्थित शिव शक्ति राइस मिल की 3 मंजिला इमारत गिरने से 4 प्रवासी मजदूरों की मलबे में दबने से मौत हो गई जबकि 20 घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही प्रशासन सहित रेस्क्यू की टीमें मौके पर पहुंचकर राहत कार्य शुरू कर दिए। घायलों को एंबुलेंस की सहायता से तरावड़ी व कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। घायलों में 2 मजदूरों की स्थिति गंभीर देखते हुए उन्हें रोहतक पीजीआई रैफर कर दिया। हादसा उस वक्त हुआ, जब करीब 157 मजदूर बिल्डिंग में

मजदूर सो रहे थे।घटना अल सुबह 3 बजकर 5 मिनट की बताई जा रही हैं, उस वक्त अचानक से 3 मंजिला इमारत भरभरा कर नीचे गिर गई। जिससे अफरा-तफरी मच गई, चिल्लाने की आवाजें सुनाई देने लगी। हादसे की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस बल, दमकल विभाग व एबुलेंस की गाड़ियां पहुंची। टीमों द्वारा मलबे में दबे मजूदरों को निकालने का काम शुरू हुआ, एक के बाद एक मजदूरों को मलबे से बाहर निकाला। इनमें से 4 मजदूरों की हालात की बेहद गंभीर थी, जिन्हें डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मरने वालों में अवधेश (20) पुत्र हरीश किशन महतो, चंदन (22) पुत्र नारायण, संजय (24) पुत्र धुम्मन महतो, पंकज (25) शामिल है। जबकि 2 मजदूर छोटू पुत्र गुल्लट व देवधर पुत्र फुलकेश की हालत गंभीर होने पर उन्हें पी.जी.आई. रोहतक का रैफर कर दिया गया। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज के पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया। एसडीएम करनाल अभिनव ने बताया कि हादसे में मरने वाले मजदूरों के परिजनों को प्रत्येक को 8-8 लाख रुपए ओर घायलों को 1-1 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाएगा। मौके पर नीलोखेड़ी विधायक धर्मपाल गोंदर, पूर्व विधायक भगवान दास कबीरपंथी, डीसी अनीश यादव, एसपी शंशाक कुमार, डीएसपी गौरव फौगाट, डीडीपीओ राजबीर, बीडीपीओ नरेंद्र सहित अन्य अधिकारी घटना स्थल पर पहुंचे। डीसी अनीश यादव ने कहा कि हादसा बहुत दुखद हैं। इसमें 4 मजदूरों की मौत हुई है जबकि 20 घायल हुए हैं। जिनका इलाज चल रहा है। जिस वक्त हादसा हुआ, उस वक्त बिल्डिंग में 150 मजदूर सो रहे थे, जो अन्य खिड़कियों आदि से किसी तरह से निकल गए। उन्होंने कहा कि हादसे के पीछे क्या कारण रहे हैं, इस पर कहा कि ऐसा लग रहा है बिल्डिंग अनसेफहैं।

मनीष सिसोदिया की जमानत पर फैसला सुरक्षित, दिल्ली की कोर्ट 26 अप्रैल को सुनाएगी आदेश

(एजेंसी)

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के खिलाफ दर्ज मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मंगलवार को सुनवाई हुई। राउज एवेन्यू कोर्ट ने बहस पूरी होने के बाद जमानत पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। अदालत अगली सुनवाई 26 अप्रैल को होगी। इससे पहले 24 अप्रैल को प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की सप्लीमेंट्री चार्जशीट पर भी दिल्ली कोर्ट में बहस होगी। राउज एवेन्यू कोर्ट ने सोमवार को सिसोदिया की न्यायिक हिरासत सीबीआई मामले में 27 अप्रैल तक और ईडी मामले में 29 अप्रैल तक बढ़ाई है। कोर्ट में ईडी के वकीलों ने कहा कि अप्रैल के अंत तक मनीष सिसोदिया, अमनदीप सिंह ढाल और अरुण रामचंद्र पिल्लई के खिलाफ चार्जशीट दाखिल कर दी जाएगी। मनीष सिसोदिया के वकील ने कहा ईडी का काम ये बताना नहीं है जीओएम और कैबिनट में क्या हुआ? ईडी को ये बताना चहिए कि अगर कोई अपराध हुआ है तो इससे किसको फायदा पहुंचा है। सिसोदिया के वकील ने कहा कि सिर्फ अनुमानों के आधार पर सिसोदिया को हिरासत में नहीं रखा जा सकता है।

कुशीनगर में आग से जलकर 3 लोगों की मौत, दर्जनों घर जलकर राख

(एजेंसी) कुशीनगर उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले में उस समय हड़कंप मच गया जब बाजूपट्टी गांव में अज्ञात कारणों से आग लग गई । जब लोग कुछ समझ पाते तब तक आग ने लगभग 10 घरों को अपनी चपेट में लिया। लोगों ने मामले की जानकारी फायर ब्रिगेड को दी। मौके पर पहुंची फायर ब्रिगेड ने ग्रामीणों की मदद से बुझाने का प्रयास कर रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक घटना में 3 लोगों की जलकर मौत हो गई है। हालांकि मौके पर फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां आग पर काबू पाने में जुटी हैं। वहीं सीएम योगी आग से जलकर मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया है।

अतीक अहमद के वकील के घर पर बमबाजी, सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही पुलिस

(संवाददाता)

प्रयागराज । माफिया अतीक अहमद के वकील विजय मिश्रा के घर पर बम फेंके गए है। बताया जा रहा है कि 30-32 साल के लड़कों ने इस वारदात को अंजाम दिया है। वहीं, अब पुलिस सीसीटीवी कैमरों से इस घटना का पता लगाने में जुटी हुई है। प्रयागराज के कर्नलगंज क्षेत्र में बमबाजी की गई है। मिली जानकारी के मुताबिक, प्रयागराज में कर्नलगंज क्षेत्र की कटरा गोबर गली में देसी बम फेंके गए है। बताया जा रहा है कि यह बमबाजी दहशत फैलाने के उद्देश्य से की गई है। जानकारी के मुताबिक, हिस्ट्रीशीटर हर्षित सोनकर द्वारा बम चलाए गए है। बता दें कि अतीक-अशरफ हत्याकांड के बाद प्रयागराज में

इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई थी। सोमवार की देर रात इंटरनेट बहाल किया गया है। पुलिस ने बताया कि अभी तक घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। सहायक पुलिस आयुक्त (शिवकुटी) राजेश कुमार यादव ने बताया कि कर्नलगंज थाना क्षेत्र में अंतर्गत कटरा की गोबर गली में कुछ युवकों ने आपसी रंजिश के चलते बम फेंका था। जिसमें संयोगवश अतीक अहमद के वकील दयाशंकर मिश्रा के मकान के सामने विस्फोट हुआ। उन्होंने बताया कि इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। उन्होंने कहा, स्थानीय लोगों के मुताबिक, हर्षित सोनकर नाम के युवक का रौनक, आकाश सिंह और छोटे के साथ पैसे को लेकर कुछ विवाद था और इस कारण सोनकर ने रौनक, आकाश और छोटे का पीछा करते हुए उनपर देसी बम फेंका। यादव ने बताया कि संयोगवश बम वकील दयाशंकर मिश्रा के मकान के सामने गिरा। घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। उन्होंने बताया कि सोनकर बम फेंककर वहां से फरार हो गया। इस संबंध में प्राथमिकी दर्ज की जा रही है और जल्द ही आरोपी की गिरफ्तारी की जाएगी।बता दें कि प्रयागराज के माफिया डॉन अतीक अहमद और उसके भाई अशरफअहमद की गोली मारकर हत्या कर दी। प्रयागराज में मेडिकल के लिए ले जाते समय गोली मारकर इस हत्याकांड को अंजाम दिया गया। दोनों के हाथों में हथकड़ी लगी हुई थी। तीन हमलावरों ने अतीक के सिर में गोली मारी और अशरफ के भी सिर में गोली लगी। हमलावरों ने कई राउंड फायरिंग की। गोली मारने के बाद तीनों हमलावरों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

बिलकिस बानों के दोषियों की रिहाई पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई गुजरात सरकार को फटकार, कहा, सत्ता का अवैध प्रयोग ना हो

(एजेंसी) नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बिलकिस बानो की याचिका पर सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान गुजरात सरकार को फटकार लगाते हुए कहा कि आखिर आपको इस बात ध्यान रखना चाहिए कि कभी भी सत्ता का अवैध प्रयोग ना हो। कोर्ट ने कहा कि यह एक ऐसा मामला है जहां एक गर्भवती महिला के साथ गैंगरेप किया गया और उसके सात रिश्तेदारों की हत्या कर दी गई। हमने आपको (गुजरात सरकार) सभी रिकॉर्ड पेश करने के लिए कहा था। हम जानना चाहते हैं कि क्या आपने अपना विवेक लगाया है। अगर हां तो बताएं कि आपने किस सामग्री को रिहाई का आधार बनाया है। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान कहा कि हम केवल यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि शक्ति का वास्तविक प्रयोग हो। सत्ता का

कोई अवैध प्रयोग न हो। जिस तरह से अपराध किया गया था वह भयानक है। बता दें कि बिलकिस बानो ने याचिका में गुजरात सरकार पर अपने मामले के दोषियों को समय से पहले रिहा करने का आरोप लगाया था। उन्होंने अपनी याचिका में 11 दोषियों को रिहा किए जाने के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती भी दी है। सुनवाई के दौरान केंद्र और गुजरात सरकार की ओर से ौळैट राजू ने कहा कि हम उस आदेश पर पुनर्विचार की मांग कर रहे हैं, जिसमें हमें इस अदालत द्वारा जारी की गई फाइलें पेश करने के लिए कहा गया है। हम रिव्यू दाखिल कर रहे हैं। हमने फाइल पेश करने के लिए समय भी मांगा है। ये सरकार का विशेषाधिकार है। एसवी राजू ने कहा कि 2002 के गुजरात दंगों के दौरान सामूहिक दुष्कर्म और परिवार के सात सदस्यों की हत्या करने के मामले में राज्य सरकार के 11 दोषियों की सजा में छूट देने के फैसले के खिलाफभी एक याचिका दायर की है। जिसमें उन्होंने कहा कि दुष्कर्म के दोषियों की समय से पहले रिहाई ने समाज की अंतरात्मा को झकझोर कर रख दिया है।

पिछली सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने भी रिहाई पर सवाल उठाए थे। क्या रिहाई देने के लिए गुजरात सरकार का अधिकार क्षेत्र था ? किस अधिकार क्षेत्र के तहत गुजरात ने रिहाई की ? क्या अदालत ऐसे निकाय को रिहाई पर विचार करने को कह सकती है जिसका अधिकार क्षेत्र ना हो ? हम इन सब पहलुओं पर विचार करेंगे। कोर्ट ने आगे कहा कि दोषी करार दिए गए हर शख्स को एक हजार दिन से अधिक का पैरोल मिला है। हमारा मानना है कि जब आप शक्ति का प्रयोग करते हैं तो उसे जनता की भलाई के लिए किया जाना चाहिए।

चाहे आप जो भी हों, आप कितने भी ऊंचे क्यों ना हों, भले ही राज्य के पास विवेक हो? यह जनता की भलाई के लिए होना चाहिए. ऐसा करना एक समुदाय और समाज के खिलाफ अपराध है। कोर्ट ने गुजरात से सरकार से पूछा कि दोषियों की रिहाई करके आप क्या संदेश दे रहे हैं ? आप सेब की तुलना संतरे से कैसे कर सकते हैं? इतना ही नहीं आप एक व्यक्ति की हत्या की तुलना कई लोगों के सामूहिक हत्या से कैसे कर सकते हैं?

जी20 प्रतिनिधियों ने जन औषधि केंद्र योजना में दिखाई दिलचस्पी

मांडविया बोले, हरसंभव मदद करेगा भारत

(एजेंसी) पणजी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि पणजी में जी-20 के स्वास्थ्य कार्यकारी समूह की बैठक में शामिल हुए प्रतिनिधियों ने जन औषधि केंद्र में दिलचस्पी दिखायी है और उनमें से कुछ ने अपने देश में इसे लागू करने की इच्छा जताई है जिसके लिए भारत हरसंभव मदद देगा। मांडविया ने 10 प्रतिनिधियों को जन औषधि केंद्र का दौरा कराया। उन्होंने उन्हें बताया कि कैसे प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि योजना पूरे देश में लोगों को गुणवत्तापूर्ण तथा किफायती दवाइयां उपलब्ध कराती है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि भारत ने कभी स्वास्थ्य को व्यापार से नहीं जोड़ा। उन्होंने कहा कि देश में अभी 9,500 से अधिक जन औषधि केंद्र हैं। मांडविया ने कहा, ''जी20 (स्वास्थ्य कार्यकारी समूह बैठक) में आए प्रतिनिधियों ने जन औषधि केंद्र का दौरा किया और इस लोक कल्याण परियोजना के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी ली। उनमें से कुछ अपने देश में इस योजना को लागू करना चाहते हैं। भारत इस संबंध में उन्हें हरसंभव मदद उपलब्ध कराएगा। पणजी में जन औषधि केंद्र के प्रभारी विनोद मेनन ने कहा कि प्रतिनिधि उनसे भारत के सभी केंद्रों में दवाइयों के निर्माण से लेकर वितरण की पूरी प्रक्रिया जानना चाहते थे। मेनन ने कहा, ''वे जानना चाहते थे कि सरकार कहां से दवाइयां खरीदती है या उनका निर्माण करती है और कैसे उन्हें विभिन्न केंद्रों तक पहुंचाया जाता है। वे उस सॉफ्टवेयर के बारे में भी जानने के इच्छुक थे।

CMYK

संपादकीय

एकता के यक्ष प्रश्न

यह तो तय था कि आगामी वर्ष आम चुनाव से पहले भाजपा के खिलाफ विपक्षी एकजुटता की कोशिशें तेज होंगी। लेकिन कर्नाटक चुनाव से पहले ही एकजुटता की कवायद शुरू हो जाएगी, ऐसी उम्मीद कम ही थी। शायद मानहानि मामले में राहुल गांधी की सांसद के रूप में सदस्यता समाप्त किये जाने और फिर उनसे सरकारी आवास खाली कराये जाने के घटनाक्रम ने विपक्षी दलों को एकजुट होने के लिये प्रेरित किया। बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राजद नेता व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव के कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष के घर पर राहुल गांधी से हुई मुलाकात को विपक्षी एकता की दिशा में बड़ी पहल कहा जा रहा है। हालांकि, इन एकता के प्रयासों में कोई नई बात नहीं है क्योंकि बिहार सरकार में पहले ही तीनों दल शामिल हैं। इससे पूर्व फरवरी में भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पूर्णिया रैली में कांग्रेस से मोदी सरकार के खिलाफ तुरंत एकजुट होने की बात कह चुके थे। लेकिन राहुल प्रकरण ने विपक्षी दलों को असुरक्षाबोध से भर दिया और यह निष्कर्ष समझ में आने लगा कि यदि हम एकजुट न हुए तो तंत्र के निरंकुश व्यवहार का शिकार होना पड़ सकता है। जिसके चलते कई राजनीतिक दल, जो विपक्षी एकता में कांग्रेस की भूमिका के प्रति किंतु-परंतु करते थे, वे भी अब एकता के प्रयासों को नई उम्मीद से देख रहे हैं। यहां तक कि कांग्रेस की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी भी समान विचार वाले दलों के साथ समन्वय की बात करने लगी हैं। कुछ लोगों का मानना है कि कर्नाटक चुनाव से पहले एकजुटता के जरिये विपक्ष महासमर की मॉक ड्रिल करने के मूड में है। वैसे उसके बाद साल के अंत तक महत्वपूर्ण राज्यों राजस्थान, मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में भी चुनाव होने हैं। कांग्रेस के लिये बेहतर प्रदर्शन की चुनौती यह भी होगी कि इन तीनों राज्यों में उसकी ही सरकारें हैं। ऐसे में सवाल उठेगा कि क्या कांग्रेस विपक्षी एकता के फार्मूले का प्रयोग इन तीन राज्यों से शुरू कर देगी ?दरअसल, विपक्षी एकता की कवायद गाहे-बगाहे होती रही हैं, लेकिन इनमें तेजी बड़े चुनाव से पहले ही आती है। फिर कई राज्यों की सत्ता में काबिज विपक्षी दलों के क्षत्रप कांग्रेस को लेकर परहेज करते रहे हैं। इनमें वे दल भी शामिल हैं जिनका जन्म ही कांग्रेस विरोध और इस पार्टी से टूटकर हुआ है। मसलन उत्तर प्रदेश में सपा सुप्रीमो अखिलेश,बी.आर.एसघ् सुप्रीमो चंद्रशेखर राव तथा तृणमूल कांग्रेस की मुखिया ममता बनर्जी एकता के प्रयासों में कांग्रेस की बड़ी भूमिका से परहेज करती हैं। अब भी अहम सवाल यही है कि प्रधानमंत्री का चेहरा कौन बनेगा ? लेकिन नीतीश कुमार अब विपक्षी एकता में कांग्रेस की बड़ी भूमिका के लिये मुहिम चला रहे हैं। हालांकि, अब तक अडाणी प्रकरण में जेपीसी जांच के मुद्दे पर अलग राय रखने वाले एनसीपी प्रमुख शरद पवार को विपक्षी एकता के प्रयासों में बाधक बताया जा रहा था, लेकिन अब पवार ने भी कह दिया है कि जेपीसी मुद्दे पर अलग राय होने के बावजूद वे विपक्षी एकता के पक्षधर हैं।

रोजगार मेले में अच्छे दिन

2014 के चुनावों में भाजपा ने भ्रष्टाचार, महंगाई, और बेरोजगारी को बड़ा मुद्दा बनाया था। भाजपा अपने प्रचार में यह बताती थी कि देश में ये सारी समस्याएं कांग्रेस सरकार की देन हैं और मोदीजी प्रधानमंत्री बनें तो इन सारी समस्याओं से मुक्ति मिल जाएगी। अच्छे दिन आएंगे का नारा, यहीं से निकला था। प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेन्द्र मोदी ने उस दौरान देश से कई वादे किए थे। जैसे भाजपा के सत्ता में आते ही विदेशों में जमा काला धन वापस लाया जाएगा और हर भारतीय के खाते में 15-15 लाख रूपए जमा हो जाएंगे। एक वादा रोजगार का भी था कि हर साल दो करोड़ लोगों को भाजपा सत्ता में आने पर रोजगार देगी। इस तरह के वादे सुनकर आम भारतीयों की स्थिति अंधा क्या चाहे, दो आंखें वाली हो गई थी। बिना किसी खास मेहनत के, केवल एक पार्टी को जिताने पर अगर 15 लाख खाते में आते हैं, तो क्या बुरा सौदा है। लिहाजा बहुत से मतदाताओं ने भाजपा को वोट दिए। बेरोजगारों ने भी शायद यही सोचा होगा कि जिन 2 करोड़ लोगों को रोजगार मिलेगा, उसमें वे भी शामिल होंगे। अपने वादों के भरोसे भाजपा सत्ता में आ गई। इसके बाद लोग इंतजार करते रहे कि अब वादों को निभाया जाएगा। इस इंतजार में उन्हें नोटबंदी का फरमान मिला। लोग अपनी ही पूंजी के लिए कतारों में खड़े हो गए। कहां तो 15 लाख हरेक खाते में आने थे, कहां पाई-पाई के मोहताज लोग हो गए। चार साल बाद कोरोना के कारण हुए लॉकडाउन में जो छोटे-मोटे रोजगार थे, वे भी चले गए। 2 करोड़ लोगों को रोजगार देने की जगह लाखों लोगों को बेरोजगार कर दिया गया। सत्ता के 9 सालों में कई बार स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, वोकल फॉर लोकल, जैसी मुहिम छेड़ी गई। बीच-बीच में पकौड़ा बेचने और पान लगाने जैसे रोजगारों का सुझाव भी मिला। लोग अच्छे दिनों का इंतजार करते रहे और अब जनता को रोजगार मेले में घुमाया जा रहा है। 10 लाख कर्मियों के लिए भर्ती अभियान श्रोजगार मेलाश् के तहत गुरुवार को करीब 71,000 युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विकसित भारत की संकल्प से सिद्धि के लिए हमारी सरकार युवाओं की प्रतिभा और ऊर्जा को सही अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। आज का नया भारत जिस नई नीति और रणनीति पर चल रहा है उसने देश में नई संभावनाओं और अवसरों के द्वार खोल दिए हैं। एक वाक्य में तीन बार नए शब्द का जिक्र कर देने से हालात नए नहीं हो जाएंगे, ये बात प्रधानमंत्री अच्छे से समझते हैं, फिर भी शब्दों की बाजीगरी से वे युवाओं को ये समझा रहे हैं कि सरकार युवाओं की प्रतिभा को सही अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। ये कैसी प्रतिबद्धता है, जिसमें एक अदद नौकरी के लिए 9 साल का लंबा इंतजार करवाया गया और युवाओं के सामने रोजगार पाना अब भी बड़ी चुनौती है। करोड़ों बेरोजगारों में कुछ हजार को नौकरी के लिए पत्र देकर क्या सरकार अपनी पीठ थपथपाने का हक रखती है, ये सवाल सरकार से किया जाना चाहिए।रोजगार मेले के मंच को प्रधानमंत्री ने अपनी उपलब्धियां गिनाने के लिए भी इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा कि आज युवाओं के सामने कई ऐसे सेक्टर खुल गए हैं जो 10 साल पहले युवाओं के सामने उपलब्ध ही नहीं थे। भारत किस तरह दुनिया में तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था बन रहा है और कैसे रक्षा, विज्ञान, यातायात, शिक्षा, चिकित्सा हर क्षेत्र में हम आगे बढ़ रहे हैं, इसका उल्लेख भी उन्होंने किया। श्री मोदी ने कहा कि आज आधुनिक सैटेलाइट से लेकर सेमी हाई स्पीड ट्रेन तक भारत में ही निर्मित हो रहे हैं।भारत कई क्षेत्रों में जिस तरह आत्मनिर्भर बना है, वह सभी देशवासियों के लिए गौरव की बात है। लेकिन प्रधानमंत्री ने हरेक बात का श्रेय अपनी सरकार को ही दिया। 2014 के बाद देश में क्या-क्या बदलाव आए, इसका जिक्र श्री मोदी ने किया। विचारणीय बात ये है कि क्या सैटेलाइट या ट्रेन या मिसाइल या दवाइयां बनाने के लिए अधोसंरचना, संसाधन और सुविधाएं बीते 9 सालों में ही आई हैं या इससे पहले ही इन सबके लिए नींव तैयार की जा चुकी थी। जब भाजपा इस बात का ईमानदारी से विश्लेषण करेगी तो पाएगी कि आज विकास की जिस इमारत को खड़ा करने का दावा वो कर रही है, उसकी नींव पिछले 75 बरसों में अथक मेहनत से तैयार की गई है। बैलगाड़ी पर लाद कर रॉकेट ले जाने से लेकर आज मंगल अभियान तक का सफर कई पड़ावों से गुजरा है, इसमें किसी एक सरकार को श्रेय नहीं दिया जा सकता। श्री मोदी ने पिछली सरकार यानी कांग्रेस पर तंज कसते हुए ये भी कहा कि 2014 तक ग्रामीण इलाकों में सड़कों की लंबाई भी 4 लाख किलोमीटर से कम थी, लेकिन आज ये आंकड़ा बढ़कर सवा 7 लाख किलोमीटर से ज्यादा हो चुका है। यहां आंकड़ों के खिलवाड़ का खुलासा भी होना चाहिए। दरअसल अप्रैल 2018 में नितिन गडकरी ने राजमार्गों की लंबाई नापने की नई अवधारणा बताई थी। जिसमें राजमार्ग की कुल लंबाई की गणना करने के बजाय बनाई गई प्रत्येक नई लेन की लंबाई को मापना शामिल था। मसलन, चार लेन वाले राजमार्ग के एक किमी को चार किमी के रूप में गिना जाने लगा, यानी हर एक लेन के एक किमी को जोड़ा गया, जबकि पहले इसे एक किमी ही माना जाता था। इस नई विधि से सड़कों की लंबाई बढ़ी हुई ही दिखेगी।

दिशाहीन होता धार्मिक अतिवाद

संजीव ठाकुर

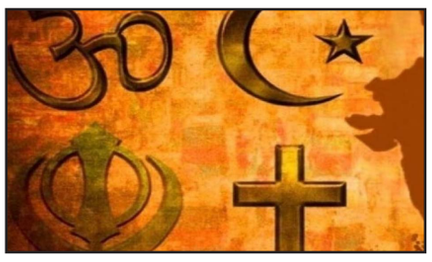

धर्म की अवधारणा ही परोपकार, जनकल्याण, अहिंसा तथा मानवता को निरंतर आगे बढ़ाना है। जबकि अतिवाद किसी मान्यता विचार व अवधारणा को जबरन लागू करने की प्रक्रिया गत सोच है। अतिवाद ही किसी भी विचारधारा या किसी पंथ को अति होने तक ले जाना है। अतिवाद किसी भी धार्मिक और राजनीतिक विषय में ऐसी विचारधारा के लिए प्रयुक्त होता है जो समाज की मुख्यधारा के नजरिए को स्वीकार नहीं करती है। यह एक ऐसा राजनीतिक अथवा धार्मिक सिद्धांत है जो अमर्यादित नीति का पक्षधर है तथा इसमें मध्यस्थता की कोई गुंजाइश भी नही होतीहै। यह धर्म की ओर एवं कठोर मान्यताओं को लोगों पर जबरदस्ती थोपने का कार्य करता है, तथा हिंसा ,हत्या बलात्कार आदि को सर्व मान्य रूप से सही ठहराता है। भारत में धार्मिक विवाद का असर युवाओं पर सबसे ज्यादा पड़ता है क्योंकि युवा मन अपरिपक्व तथा किसी विचारधारा में ढला हुआ नहीं रहता और भारत में 65: 35 साल से कम उम्र के युवा निवासरत हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश हैस स्वतंत्रता के बाद से भारत के संविधान में लोकतंत्र को सर्वोपरि स्थान दिया गया हैस देश की भौगोलिक तथा जनसंख्यात्मक विशालता में कुछ तत्व सांप्रदायिक हिंसा एवं अराजकता के परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हो सकतें हैं, पर भारतीय लोकतंत्र की महानता एवं विशालता है कि इससे संवैधानिक भारतीय लोकतंत्र को बहुत ज्यादा फर्क नहीं पड़ता, पर यह तय है कि सांप्रदायिक हिंसा एवं धार्मिक कट्टरता से लोकतंत्र की अवधारणा थोड़ी दिग्भ्रमित जरूर होती है पर इसकी मजबूती ना तो पहले कम हुई है और ना ही भविष्य में होने की कोई गुंजाइश ही है। हिंसा ,विवाद किसी भी बात का कोई हल नहीं। यह लोकतंत्र के लिए एक धब्बे के समान है। किसी भी देश में लोकतंत्र की आम धारणा आपसी सद्भाव और समभाव को लेकर आधारभूत रचनात्मक रूप से की गई है। विश्व के शांति प्रस्तावक भारत देश में हिंसा और हिंसक आंदोलन की कोई जगह नहीं एवं यह किसी धार्मिक, सामाजिक अथवा आर्थिक असहमति का परिणाम तो कतई नहीं हो सकती है।भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक,प्रजातांत्रिक स्वतंत्र राष्ट्र है।वैचारिक चिंतन, प्रभुद्धता लोकतंत्र के प्रमुख अवयव होते हैं, राष्ट्र के किसी भी नीति में सहमत और असहमत होना एक सामान्य प्रक्रिया, प्रतिक्रिया हो सकती है, और आम जनमानस का किसी मुद्दे पर आप सहमत होना भी एक सामान्य बात हो सकती है पर किन्ही भी परिस्थितियों में असहमति हिंसा के रूप में कतई बर्दाश्त के योग्य नहीं होनी चाहिए, विरोध का स्वरूप राष्ट्रीय संपत्ति की बर्बादी तो किसी भी काल और खंड में स्वीकार्य नहीं है। यह राष्ट्र के लिए घातक और विकास की अवधारणा को अवरुद्ध करने वाला आत्मघाती कदम है।आंदोलन का स्वरूप सदैव शांति पूर्वक हो तो राष्ट्र तथा आमजन के हित में ही होगा। आंदोलनकारियों को शायद यह गुमान नहीं है कि राष्ट्रीय सरकारी संपत्ति आपके द्वारा दिए गए टैक्स के रूप में रुपयों से ही निर्मित होती है, इसे नष्ट करके आप स्वयं अपनी संपत्ति का नुकसान ही कर रहे हैं। आजादी के बाद से भारत के समक्ष कई सामाजिक आर्थिक समस्याएं आई है। अक्सर सामाजिक क्षेत्र में समस्याओं ने अर्थव्यवस्था की उत्तरोत्तर प्रगति पर अवरोध खड़े किए हैंस देश की सामाजिक विषमताओं ने समाज में कई समस्याओं को जन्म दिया है एवं आर्थिक प्रगति पर विभिन्न सोपानों में लगाम लगाई है। भारतीय समाज में विषमता एवं विविधता भारत के लिए एक बड़ी समस्या बनकर सामने खड़ी है। स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में विषमताएं भारत के लिए चुनौती बनकर वर्तमान में कई बाधाएं उत्पन्न कर रही हैं। आज जातिगत संघर्ष बढ़ गए हैं,जातिगत संघर्षों को राजनीतिक महत्वाकांक्षा ने बहुत क्लिष्ट बना दिया है। राजनीति सदैव महत्वाकांक्षा के बल पर जातिगत समीकरण को नए-नए रूप तथा आयाम देती आई है और सदैव समाज में वर्ग विभेद आर्थिक विभेद कर के अपना उल्लू सीधा करना मुख्य ध्येय बन चुका है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग सदैव सत्ता के संघर्ष के लिए न सिर्फ एक दूसरे का परस्पर विरोध करते है बल्कि शासन प्रशासन के विरोध में भी सदैव खड़े पाए गए हैं। सत्ता पाने की लालसा में जातीय संघर्ष, नक्सलवाद तेजी से समाज में पनपता जा रहा है। भारतीय परिपेक्ष में आज सिर्फ जाती ही नहीं धार्मिक महत्वाकांक्षा देश के समाज के समक्ष चुनौती बन गया है। भारत में हिंदू ,मुस्लिम,सिक्ख,इसाई जातीय संघर्ष ऐतिहासिक तौर पर अपनी जड़ें जमां चुका है, वर्तमान में मंदिर और मस्जिद के झगड़े देश में अशांत माहौल पैदा करने का एक बड़ा सबक बन चुके है।और यही वर्ग विभेद संघर्ष भारतीय आर्थिक विकास के बीच एक बड़ा अवरोध बनकर खड़ा है। पश्चिमी विद्वान भी कहते हैं कि भारत के राष्ट्र के रूप में विकसित होने में जाति एवं धर्म ही सबसे बड़ी बाधाएं हैं जिन्हें दूर करना सर्वाधिक कठिन कार्य है क्योंकि इसकी जड़ें भारत के स्वतंत्रता के पूर्व से देश में गहराई लिए हुए हैं। जातीय वर्ग संघर्ष और भाषाई विवाद ऐसा मुद्दा रहा है जिससे लगभग एक शताब्दी तक भारत आक्रांत रहा है। आजादी के बाद से ही भाषा विवाद को लेकर कई आंदोलन हुए खासकर दक्षिण भारत राज्यों द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने एवं देश पर हिंदी थोपे जाने के विरोध में विरोध प्रदर्शनों को प्रोत्साहित किया गया। आज भी विभिन्न राज्यों में भाषाई विवाद एक ज्वलंत एवं संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है, चाहे वह बंगाल हो, तमिलनाडु हो, आंध्र प्रदेश हो, उड़ीसा और महाराष्ट्र में भी भाषाई विवाद अलग-अलग स्तर पर सतह पर पाए गए हैं। समान सिविल संहिता को लेकर बहुसंख्यक संविधान में आक्रोश है दूसरी तरफ अल्पसंख्यक समुदाय इसलिए डरा हुआ है कि कहीं उसकी अपनी अस्मिता एवं पहचान अस्तित्व हीन ना हो जाए। स्वतंत्रता के बाद से यह विकास की मूल धारणा थी कि पंचवर्षीय योजनाओं में वर्ग विहीन समाज में लोकतांत्रिक एवं धर्मनिरपेक्ष तरीके से समाज का आर्थिक विकास तथा रोजगार के साधन उपलब्ध हो सकेंगे। पर स्वतंत्रता के 75 साल के बाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में वर्ग विभेद भाषाई विवाद ने अभी भी आर्थिक विकास में कई बाधाएं उत्पन्न की है। संविधान में सदैव सकारात्मक वर्ग विभेद एवं विकास की अवधारणा को प्रमुखता से शामिल किया गया था और पंचवर्षीय योजनाओं में भी विकास को वर्ग विभेद से अलग रखकर विकास की अवधारणा को बलवती बनाया गया है। सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक विविधता वाले समाज को विवादों से परे रख आर्थिक विकास की परिकल्पना एक कठिन और दुष्कर अभियान जरूर है पर असंभव नहीं है। और इसी की परिकल्पना को लेकर आजादी के पश्चात से पंचवर्षीय योजनाओं का प्रादुर्भाव सरकार ने समय-समय पर लागू किया है। विकास की अवधारणा में राष्ट्र की मुख्य धारा में समाज के पिछड़े वर्ग को शामिल कर उन्हें सम्मुख लाना होगा। यदि देश के पिछड़ा वर्ग और गरीब तबका विकास की मुख्यधारा से जुड़ता है तो गरीबी, भुखमरी, नक्सलवाद जैसे संकट अस्तित्व हीन हो जाएंगे और ऐसी समस्या धीरे धीरे खत्म होती जाएगी। आवश्यकता यह है कि हमें राष्ट्रवाद को सर्वोपरि मानकर इस पर अमल करना होगा। फिर चाहे वह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद हो या समावेशी राष्ट्रवाद हो। समाज की मुख्यधारा में राष्ट्रवाद को एक प्रमुख अस्त्र बनाकर देश की प्रगति में इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। भारत में आजादी के 75 वर्ष बाद भी ब्रिटिश हुकूमत की तरह गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी, नक्सलवाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, भाषावाद एवं क्षेत्रीय विघटनकारी प्रवृत्तियां सर उठाये घूम रही हैं, हम इन पर अभी तक प्रभावी नियंत्रण नहीं लगा पाए हैं। हमें इन सब विसंगतियों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय नागरिकता एवं भारत राष्ट्र की विकास की अवधारणा को राष्ट्रवाद से जोड़कर आर्थिक विकास को एक नया आयाम देना होगा, तब जाकर भारत वैश्विक स्तर पर आर्थिक रूप से मजबूत एवं आत्मा नर्भर बन सकेगा। किसी बात का विरोध हिंसा के बिगड़े स्वरूप की तरफ शासकीय संपत्ति को नष्ट करना देश हित में नहीं।

तमिलनाडु : राज्यपाल का किस्सा

आदित्य नारायण चोपड़ा

भारत को हमारे संविधान निर्माताओं ने राज्यों का संघ (यूनियन आफइंडिया) घोषित किया तो इसके पीछे बहुत बड़ा इतिहास था जिसे समझने की जरूरत है। 1857 की पहली आजादी की लड़ाई के असफल होने के बाद जब अंतिम मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर का नामचारे का शासन भी समाप्त हो गया तो पूरे देश पर ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज कायम हो गया जिसने भारत की सल्तनत को तब ब्रिटिश की साम्राज्ञी महारानी विक्टोरिया को बेचा और उसके बाद सीधे भारत ब्रिटिश सरकार की हुकूमत में चला गया जिसने अपने अनुसार तक कम्पनी द्वारा विभिन्न देशी राजे-रजवाड़ों के साथ हुए समझौतों या सन्धियों के अनुसार चलाना शुरू किया और भारत में कानून, शिक्षा व प्रशासन के क्षेत्र में अपने नियम लागू करने शुरू किये और 1919 के आते-आते पहला भारत सरकार कानून बनाया जिसमें भारत को विभिन्न क्षेत्रों व जातीय समूहों व सम्प्रदायों व वर्गों का जमघट बताया गया। इस कानून में अंग्रजों ने भारत को एक देश या राष्ट्र के रूप में मान्यता नहीं दी और कई राष्ट्रीयताओं वाले देश के रूप में स्वीकार किया। मगर 1916 के बाद कांग्रेस पार्टी में महात्मा गांधी के सक्रिय होने के बाद अंग्रेजों की दासता से मुक्ति पाने का आन्दोलन जैसे-जैसे तेज होता गया वैसे-वैसे ही समूचे भारत में एक राष्ट्र होने के स्वर को मुखरता मिलने लगी और 1928 के आते-आते कांग्रेस पार्टी ने भारत के भविष्य के संवैधानिक स्वरूप के लिए देश के प्रख्यात वकील पं. मोती लाल नेहरू के नेतृत्व में एक संविधान तैयार करने की समिति गठित की जिसने देश के उस समय के सभी राजनैतिक दलों व प्रमुख सामाजिक संगठनों व आर्थिक संगठनों के प्रतिनिधियों को भी विचार-विमर्श के लिए आमन्त्रित किया। इस समिति के सदस्यों में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भी शामिल थे। इस समिति ने 1932 में आयी अपनी रिपोर्ट में सबसे पहले यह घोषित किया कि भारत विभिन्न क्षेत्रीय पहचान वाले राज्यों का एक संघ राज्य है। समिति की रिपोर्ट भारत के स्वतन्त्रता के इतिहास में कई मायनों में मील का पत्थर मानी जाती है क्योंकि इसने एक ऐसी संघीय सरकार की परिकल्पना की थी जो विभिन्न राज्यों को उनके वाजिब प्रशासनिक अधिकार देते हुए केन्द्र सरकार को मजबूत स्थिति में देखती थी। इसके बाद अंग्रेज सरकार भारत की हुकूमत चलाने के लिए दूसरा भारत सरकार कानून लाई जिसमें भारत के एक संघीय राज्य होने को स्वीकृति दी गई थी परन्तु इसी वर्ष ब्रिटिश सरकार ने बर्मा (म्यांमार) को भारत से अलग करके नया देश बना दिया था। मोती लाल समिति ने केन्द्र व राज्य सरकारों के अधिकारों का बंटवारा भी किया था। बाद में जब 1946 से भारत का संविधान बाबा साहेब अम्बेडकर ने लिखना शुरू किया तो मोती लाल रिपोर्ट उनके लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित हुई। हालांकि 15 अगस्त, 1947 को भारत का बंटवारा मजहब की बुनियाद पर कर दिया गया था लेकिन इसके बावजूद भारत के संघीय राज्य की परिकल्पना वही रही जो रिपोर्ट में पेश की गई थी। अत: स्वतन्त्रता के बाद 1956 के आते-आते भाषाई आधार पर भारत में जो कुल 15 राज्य बने उनका मुख्य आधार सांस्कृतिक व सामाजिक एकता भी रही। इन राज्यों का सीधा अन्त-सम्बन्ध केन्द्र से जोड़े रखने के लिए ही राज्यपाल के पद को जरूरी समझा गया जिसकी मार्फत सम्पूर्ण भारत विविध सांस्कृतिक पहचान के क्षेत्रों के वजूद के बावजूद एकता के तार में बंधा रहे केन्द्र कृत्य रूप से लागू संविधान के अनुसार काम करता रहे।राज्यपाल के कुछ अधिकार भी नियत किये गये और उसे विभिन्न राज्यों में जनता द्वारा चुनी गई सरकारों का संरक्षक भी बनाया गया क्योंकि ये सरकारें संविधान के अनुसार हुए चुनावों के बाद बहुमत की सरकारें होनी थीं। इन बहुमत की सरकारों की इच्छा संविधान के दायरे में उठाई गई किसी भी इच्छा को जनता की इच्छा माना गया और राज्यपाल के लिए इनको स्वीकार करना उसका कर्त्तव्य बनाया गया। जनमत की इच्छा का प्रदर्शन राज्य विधानसभाओं में ही हो सकता है क्योंकि वहां ही जनता के चुने हुए प्रतिनिधि एकत्र होकर सरकार का गठन करते हैं। यह सरकार अपने बहुमत के बूते पर जन हित के लिए कोई भी प्रस्ताव या विधेयक पारित करके राज्यपाल की स्वीकृति के लिए भेजती है, जिसे राज्यपाल सामन्य तौर पर अपनी सहमति प्रदान कर देते हैं। वह किसी विधेयक के बारे में यदि कोई आशंका व्यक्त करते हैं तो उसे केवल एक बार पुनर्विचार के लिए राज्य सरकार के पास भेज सकते हैं परन्तु उसके पुन: यथावत हालत में लौटाये जाने पर उस पर उन्हें अपने दस्तखत करने ही पड़ते हैं परन्तु तमिलनाडु के राज्यपाल श्री एन. रवि ने राज्य सरकार को उलझन में डालने की नई तरकीब निकाल रखी है।पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से ज्यादा से भी उनके पास मुख्यमन्त्री एम.के. स्टालिन की द्रमुक पार्टी की सरकार जो भी विधेयक विधानसभा में पारित करके भेजती है उसे वह दबा कर बैठ जाते हैं और और गुम हो जाते हैं। जाहिर है उनके इस कृत्य से जनता की चुनी हुई सरकार के लोकहित में किये जा रहे सभी कामों पर उल्टा असर पड़ता है। जब श्री रवि ने विधानसभा में पारित 'आन लाइन गैम्बलिंग' या इंटरनेट के जरिये जुए बाजी की लत लगाने वाले खेलों पर प्रतिबन्ध लगाने का विधेयक पारित किया तो हुजूर उसे भी दाब कर बैठ गये। इसके खिलाफ तमिलनाडु विधानसभा में पिछले सोमवार को ही राज्यपाल के इस तरीके के खिलाफ भारी बहुमत से प्रस्ताव पारित करके केन्द्र सरकार व राष्ट्रपति से गुहार लगाई गई कि वह राज्यपालों को विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को एक निश्चित समय के भीतर स्वीकृति देने का निर्देश दें जिससे संविधान का पालन हो सके और राज्यपालों को अपने पद की गरिमा के विपरीत राजनीति करने से रोका जा सके। मगर राज्यपाल रवि ने यह विधेयक पारित होते ही आन लाइन गैम्बलिंग के विधेयक को स्वीकृति दे दी और बाकी 13 विधेयकों की स्थिति यथावत रखी। सच्विधान के नजरिये से राज्यपालों को सार्वजनिक बयान देने से और चुनी हुई सरकारों के दैनन्दिन प्रशासनिक कार्यों में हस्तक्षेप करने से भी बचना चाहिए। किसी विधानसभा में जब अपने ही राज्यपाल के बारे में उसके विरोध में प्रस्ताव पारित होता है तो इसके बहुत गंभीर मायने निकलते हैं क्योंकि राज्यपाल राज्य में संविधान के संरक्षक का कार्य राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के रूप में करते हैं और उनकी नियुक्ति तभी तक हरकत में रहती है जब तक कि राष्ट्रपति उनसे प्रसन्न रहें।

मोदी ने एकदम सही कहा था, वाकई

यूपी के लिए उपयोगी सिद्ध हुए योगी

नीरज कुमार

> योगी जिस तरह से देश के सबसे बड़े राज्य उज़र प्रदेश में कानून का राज कायम करने में सफल हुए हैं उससे प्रधानमंत्री मोदी का वह दावा सही साबित हुआ है जिसके तहत उन्होंने योगी को यूपी के लिए उपयोगी बताया था।

योगी ने जब सत्ता संभाली थी तो सबसे बड़ी चुनौती कानून व्यवस्था को सुधारना ही था। राजनीतिक विश्लेषकों का अनुमान था कि योगी को चूंकि मुख्यमंत्री बनने से पहले कोई प्रशासनिक अनुभव नहीं था, इसलिए वह यूपी को संभाल नहीं पाएंगे। मोदी है तो मुमकिन है, यह नारा आपने खूब सुना होगा लेकिन योगी है तो यकीन है नारा भी उतना ही सार्थक और प्रचलित होता जा रहा है। योगी जिस तरह से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में कानून का राज कायम करने में सफल हुए हैं उससे प्रधानमंत्री मोदी का वह दावा सही साबित हुआ है जिसके तहत उन्होंने योगी को यूपी के लिए उपयोगी बताया था। योगी ने अपने वादे के मुताबिक समाजवादी पार्टी के पूर्व सांसद और माफिया अतीक अहमद को जिस तरह मिट्टी में मिलाया है वह अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों के लिए भी प्रेरक है। योगी ने जब सत्ता संभाली थी तो सबसे बड़ी चुनौती कानून व्यवस्था को सुधारना ही था। राजनीतिक विश्लेषकों का अनुमान था कि योगी को चूंकि मुख्यमंत्री बनने से पहले कोई प्रशासनिक अनुभव नहीं था, इसलिए वह यूपी को संभाल नहीं पाएंगे। लेकिन योगी ने यूपी को संभाला, यूपी को सुधारा और यूपी में आगे बढ़ने का विश्वास पैदा कर प्रदेश को आगे बढ़ाया। जिस यूपी में कभी माफिया राज था, जिस यूपी में कभी माफिया और गैंगस्टर सपा-बसपा से सांसद और विधायक बन कर राज चलाया करते थे, जिस यूपी में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार हो गया था वहां आज योगी के शासन में माफिया खुद ही कह रहे हैं कि हमको मिट्टी में मिला दिया गया है। एनकाउंटर की पूरी कहानी, बोले- माफि याओं के खिलाफ हमारी जीरो टॉलरेंस की नीति आज यूपी में अपराधी अगर खुद थाने में आकर आत्मसमर्पण कर

रहे हैं, मुठभेड़ में मार दिये जाने के डर से जमानत लेने की बजाय जेल में पड़े रहते हैं, गाड़ी पलटने के डर से पुलिस के वाहन में बैठने से डरते हैं, पत्थरबाज अपने इरादे बदल लेते हैं, सरकारी जमीन पर अतिक्रमण करने वाले जमीन छोड़ कर भागने लगते हैं और भ्रष्टाचारी अगर थर-थर कांपते हैं तो यह नारा सफल होता दिखता है कि योगी है तो यकीन है। इन बड़े-बड़े माफियाओं का यह हाल देखकर छोटे-मोटे अपराधियों का मनोबल तो पूरी तरह खत्म हो चुका है। माफिया डॉन अतीक अहमद को ही लीजिये, उस पर सौ से ज्यादा केस दर्ज थे लेकिन हाल ही में उसे पहली बार किसी मामले में सजा हुई थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि बुलडोजर बाबा के राज से पहले सरकारें उत्तर प्रदेश में अपराधियों और आतंकवादियों का धर्म देख कर उनके खिलाफमामले को अदालतों में आगे बढ़ाया करती थीं या उनके खिलाफ मामले वापस ले लिया करती थीं। इस सबसे पुलिस का मनोबल भी टूट जाता था लेकिन योगी राज में पुलिस का मनोबल भी बढ़ाया गया है और पुलिस बल का श्बलश् भी बढ़ाया गया है। आज अखिलेश यादव और असदुद्दीन ओवैसी को भले अपराधियों का मुठभेड़ में मारा जाना न्याय तंत्र का मजाक लग रहा है लेकिन उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि यूपी पुलिस अपराधियों का जिस प्रकार खात्मा कर रही है उसमें उसे जनता का पूरा समर्थन हासिल है।

भाजपा की मेयर प्रत्याशी ने किया नामांकन

निकाय चुनाव

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ में भाजपा की मेयर पद की प्रत्याशी सुषमा खड़कवाल ने नामांकन किया। इस दौरान सांसद कौशल किशोर, लखनऊ के पूर्व मेयर और डिप्टी सीएम रहे दिनेश शर्मा समेत महानगर के तमाम बड़े नेता मौजूद रहे। हालांकि वर्तमान मेयर संयुक्ता भाटिया और उनके परिवार से कोई भी व्यक्ति नामांकन के दौरान सुषमा के समर्थन में पहुंचा। दरअसल संयुक्ता भाटिया इस बार भी खुद के लिए या अपने बदले अपनी बहू के लिए टिकट की मांग कर रही थीं। लेकिन पार्टी की तरफसे उनकी इस मांग को खारिज करते हुए पहाड़ी ब्राह्मण सुषमा को उम्मीदवार बना दिया गया। पार्टी सूत्रों का कहना है इसके पीछे लखनऊ के सांसद रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का बड़ा हाथ हैं। वहीं, सपा की मेयर उम्मीदवार वंदना मिश्र और आम आदमी पार्टी की प्रत्याशी अंजू भट्ट और कांग्रेस की प्रत्याशी संगीता जायसवाल ने भी नामांकन दाखिल किया है। उनकी पहली पसंद मेयर पद के लिए सुषमा ही थीं। बताया जा रहा है कि उनके बड़े बेटे और विधायक पंकज सिंह की पत्नी उत्तराखंड से ताल्लुक रखती हैं। इसकी वजह से दोनों ही परिवारों में बहुत अच्छे संबंध थे। सुषमा खुद पिछले 30 साल से भारतीय जनता पार्टी के लिए राजनीति कर रही हैं। लखनऊ में उत्तराखंड निवासियों के करीब 5 लाख से ज्यादा वोट हैं। ढाई लाख वोट रिटायर सैनिकों के हैं। इसी आधार पर सुषमा को मेयर पद का प्रत्याशी बनाया गया है। चर्चा थी कि पूर्व डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा भी अपनी पत्नी के लिए मेयर पद की डिमांड कर रहे थे। हालांकि उनको भी टिकट नहीं मिल पाया। इसके बावजूद उन्होंने सुषमा के नामांकन में पहुंचकर बताया पार्टी की गाइडलाइन उनके लिए कितनी महत्वपूर्ण है। दिनेश शर्मा लखनऊ के दो बार मेयर भी रहे हैं। हालांकि तब प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार नहीं थी। बाहुबली अतीक अहमद के मर्डर के बाद लखनऊ में भी सुरक्षा बढ़ा दी गई है। नामांकन स्थल पर करीब 200 से ज्यादा पुलिस वाले मौजूद थे। सभी लोगों के आई कार्ड चेक हो रहे थे। यहां तक कि नामांकन स्थल पर मीडिया वालों की भी प्रवेश नहीं दिया गया था। नगर निगम मुख्यालय के दोनों तरफ 50 मीटर पहले ही बैरिकेडिंग की जा चुकी है। नगर निकाय चुनाव में नामांकन करने का आखरी दिन 17 अप्रैल है। आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी ने अंजू भट्ट कहा कि शहर में सड़क नाली खड़ंजा सब की स्थिति खराब है। नगर निगम भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है। अगर मेयर पद में जीत होती है। तो हाउस टैक्स माफ कर दिया जाएगा और वाटर टैक्स में 50 प्रतिशत की छूट दी देंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव का आठवाँ दिन शिक्षात्मक बाल फिल्मों से हजारों छात्रों ने ली जीवन मूल्यों की सीख

संवाददाता, लखनऊ। सिटी मोन्टेसरी स्कूल द्वारा सी.एम.एस. कानपुर रोड ऑडिटोरियम में आयोजित किये जा रहे 9-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव (आई.सी.एफ.एफ.-2023) का आठवें दिन आज लगभग 12,000 से अधिक छात्रों ने शिक्षात्मक बाल फिल्मों से प्रेरणा ली। बाल फिल्मोत्सव में आज का दिन चरित्र निर्माण व जीवन मूल्यों की शिक्षा देने वाली एक से बढ़कर एक बाल फिल्मों से गुलजार रहा। इसके अलावा, बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु पधारी अभिनेत्री हिमानी शिवपुरी, वाइसओवर आर्टिस्ट हरीश भिमानी एवं बाल कलाकार अदिति जायसवाल व रूबल जैन ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा को बढ़ाया। हजारों की संख्या में उपस्थित छात्रों व युवाओं ने दिल खोलकर इनका स्वागत किया। बाल फिल्मोत्सव के अन्तर्गत आज प्रदर्शित होने वाली शिक्षात्मक बाल फिल्मों में सिंगापुर टाइम्स, मोन्टू की पलटन,

फै मिली डिनर, फीलिंग स्पेशल, सोल सर्चिंग, ज्योति, रेनड्राप लेग्स, द फ्लाइट ऑफ बेनोग, द लास्ट ब्रेक, द मंकी किंग, द मैसेन्जर, न्यू शूज, अम्ब्रेला ओसन, बड़े काम की चीज, डालफिन ब्वाय, पछतावा, मीटी नींद, बटरफ्लाई, क्यूश्चन मार्क, फरिश्ता, फ्री टु फ्लाई, सही राह, हैप्पी होम, फ्री टु स्विम, जिम्मेदारी, कलाम कलन्दर, नई तालीम, आई एम प्रिया आदि शामिल रही। विभिन्न देशों की अलग-अलग भाषाओं में बनी फिल्मों को अंग्रेजी व हिन्दी अनुवाद भी फिल्म के साथ-साथ ही चलता रहता है जिससे बच्चे आसानी से फिल्म के कथानक को समझ सकें। बाल फिल्मोत्सव में पधारी अभिनेत्री हिमारी शिवपुरी एवं वाइसओवर आर्टिस्ट हरीश भिमानी ने सी.एम.एस. कानपुर रोड पर आयोजित एक प्रेस कान्फ्रेन्स में पत्रकारों से मुलाकात की। इस अवसर पर दोनों कलाकारों ने एक स्वरे से कहा कि बच्चों के लिए शिक्षात्मक फिल्मों का आज अभाव है, ऐसे में यह फिल्म फेस्टिवल बहुत ही अच्छा प्रयास है। निश्चित रूप से छात्रों के दिल-दिमाग पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और यह आयोजन अपने उद्देश्य में सफल होगा। फिल्म फे स्टिवल के चेयरमैन डा. जगदीश गाँधी ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक अवसर है जो छात्रों को एवं खासकर युवा पीढ़ी को चरित्र निर्माण एवं सर्वांगीण विकास की प्रेरणा दे रहा है।सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी हरि ओम शर्मा ने बताया कि बाल फिल्मों का यह अनूठा आयोजन अब समापन की ओर अग्रसर हो रहा है।

संक्षिप्त समाचार

एसकेडी हास्पिटल्स समूह द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

संवाददाता, लखनऊ । शिक्षा व स्वास्थ्य समाज की प्रगति के आवश्यक तत्व है। एसकेडी समूह दिन-रात इन दोनों पर सकारात्मक कार्य कर समाज की सेवा वर्षों से करता चला आ रहा है। इस क्रम में एसकेडी हास्पिटल्स समूह ने बाराबंकी में एक स्वास्थ्य जागरूकता शिविर का आयोजन किया। जिसमें अनुभवी व वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने लोगों का नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण किया। साथ ही लोगों को नि:शुल्क दवायें भी उपलब्ध करायी। बाराबंकी के एसकेडी न्यू स्टैण्डर्ड कोचिंग इंस्टिट्यूट शाखा में आम जनता के लिये नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें पॉच सौ से अधिक लोगों ने इसका लाभ उठाया। चिकित्सा शिविर में विभिन्न प्रकार की जॉचों की सुविधा भी प्रदान की गयी। शिविर में अस्पताल के क्लिीनिकल निदेशक डा0 आशीष सिंह, आर्थोपेडिक्स, डा0 अनु सिंह,गायकेनोलॉजिस्ट, डा0 मनीष झा, कार्डियोलॉजिस्ट सहित अनेक विशेषज्ञ डाक्टरों की टीम उपस्थित थी।

लखनऊ जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण मानसिक मंदित बच्चो को देगा प्रशिक्षण

संवाददाता, लखनऊ। लखनऊ जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी कमलेश कुमार वर्मा ने बताया मानसिक मंदित (माइल्ड व मॉडरेड) बालिकाओं को नि:शुल्क शिक्षण व प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा संचालित राजकीय ममता विद्यालय, बुद्धेश्वर चौराहे के आगे जीबी पंत पॉलीटेक्निक के सामने, मोहान रोड लखनऊ में संचालित है। विद्यालय में शैक्षिक सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ है, जिसके अंतर्गत 6 से 18 आयु वर्ग तक की मॉडरेट बालिकाओं को स्मार्ट क्लास के माध्यम से नि:शुल्क शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। बालिकाओं हेतु नि:शुल्क रहने-खाने, वस्त्र, बिस्तर एवं उपचार की व्यवस्था है। इच्छुक अभिभावक व संरक्षक अपनी बालिकाओं का दिव्यांगता प्रमाण पत्र दिखाकर प्रवेश फार्म किसी भी कार्यदिव से प्राप्त कर सकते हैं।

बसपा ने जारी की 10 मेयर प्रत्याशियों की लिस्ट, शाहीन बानो को लखनऊ से टिकट

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश निकाय चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज हो गयी है। बसपा ने भी अपने मेयर प्रत्याशियों की पहली लिस्ट जारी की है, जिसमें 10 उम्मीदवारों के नामों की घोषणा की है। लिस्ट में 6 मुस्लिम चेहरों को जगह दी गयी है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ से बसपा ने शाहीन बानों को उम्मीदवार बनाया है। सपा ने वंदना मिश्रा तो बीजेपी ने लखनऊ से सुषमा खरकवाल को प्रत्याशी बनाया हैं। बसपा ने जिन 10 मेयर प्रत्याशियों की लिस्ट जारी की है उसमें लखनऊ से शाहीन बानो, आगरा से लता, फिरोजाबाद से रुखसाना बेगम, झांसी से भगवान दास फुले, सहारनपुर से खादिजा मसूद, वाराणसी सुभाष चंद्र माझी, प्रयागराज से सईद अहमद, मुरादबाद से मोहम्मद यामीन और गोरखपुर से नवल किशोर नाथानी को मेयर प्रत्याशी बनाया है।

विश्व हिमोफीलिया दिवस पर केजीएमयू मे संगोष्ठी का हुआ आयोजन

संवाददाता, लखनऊ। विश्व हिमोफीलिया दिवस के अवसर पर क्लीनिकल हिमेटोलॉजी विभाग, केजीएमयू लखनऊ में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में हिमोफीलिया के 60 मरीजों के साथ-साथ विश्वविद्यालय के चिकित्सक, समाजसेवी उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ विभाग के डा. एसपी वर्मा ने अपने स्वागत संबोधन से किया तथा हिमोफीलिया के समग्र उपचार में सही जानकारी जनमानस में देने पर बल दिया। साथ ही साथ हिमोफीलिया के मरीजों में हो रही सफल सर्जरी के बारे में बताया गया। डा. एके त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष क्लीनिकल हिमेटोलॉजी विभाग ने हिमोफीलिया रोगियों की पहचान के लिए जागरूकता एवं जांच में तेजी लाने पर बल दिया। इस अवसर पर हिमोफीलिया सोसाइटी, लखनऊ के सेकेटरी श्री विनय मनचंदा ने हिमोफीलिया पर एक वेबसाईट लान्च होने की जानकारी दी। हिमोफीलिया में सर्जरी एक कठिन कार्य है जोकि पूरे देश में कुछ ही केन्द्रों पर उपलब्ध है और उत्तर प्रदेश में केवल केजीएमयू लखनऊ में हो रहा है।

राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाली यूपी की ग्राम पंचायतों को किया गया पुरस्कृत

संवाददाता, लखनऊ। राष्ट्रीय पंचायत दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय पुरस्कारों का वितरण विज्ञान भवन, नई दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के द्वारा किया गया। इस समारोह में राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट कार्य करने वाली उत्तर प्रदेश की ग्राम पंचायतों को पुरस्कृत किया गया। इस संबंध में जानकारी उपनिदेशक पंचायतीराज प्रवीणा चौधरी ने दी। उन्होंने बताया नानाजी देशमुख सर्वोत्तम पंचायत सतत विकास पुरस्कार हेतु सुश्री गार्गी चौधरी, ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत-मिलक अमावती. विकास खण्ड-डिलारी, जनपद-मुरादाबाद को नानाजी देशमुख सर्वोत्तम पंचायत सतत् विकास पुरस्कार के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय श्रेणी में 1.25 करोड़ रुपए की धनराशि से पुरस्कृत किया गया है। दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत् विकास पुरस्कार हेतु दिलीप त्रिपाठी, ग्राम प्रधान, ग्राम पंचायत-हंसुड़ी औसानपुर, विकास खण्ड भनवापुर जनपद सिद्धार्थनगर को दीन दयाल उपाध्याय पंचायत सतत् विकास पुरस्कार श्रेणी के अन्तर्गत बाल मैत्री थीम व विषय में राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय श्रेणी में श 30 लाख रूपये की धनराशि से पुरस्कृत किया गया है।

दादा मियां की दरगाह पर रोजा अफ्तार का हुआ आयोजन

दरगाह परिसर में विभिन्न समुदायों और धर्मो के लोगों ने एक साथ बैठ कर किया इफ्तार

संवाददाता, लखनऊ। दादा मियां की दरगाह पर रोजा अफ्तार का आयोजन किया गया। जिसमें कई राजनीतिक दलों के वरिष्ठ नेताओं समेत कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।रोजा अफ्तार में कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष खाबरी,वरिष्ठ नेता नसीमुद्दीन सिद्दीकी और समाजवादी पार्टी के नेता शिवपाल यादव,फरहत हसन,अब्दुल वहीद,जावेद हुसैन, मो सादाब,परवेज अख्तर,मो अली साहिल,सलाउद्दीन सिद्दीकी,अजीज सिद्दीकी शामिल हुए।इस मौके पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मुझे वर्षों से हो रहे रोजा इफ्तार पार्टी में शामिल होकर अच्छा लगा और यह बहुत अच्छा मौका है जब एकता अखंडता के लिए सभी धर्मों के लोग एक साथ बैठकर रोजा खोला।हजरत ख्वाजा मोहम्मद नबी रजा शाह अलमारूफ दादा मियाँ की दरगाह पर सांप्रदायिक सौहार्द और एकता का प्रदर्शन करते हुए रोजा इफ्तार का आयोजन किया गया।दरगाह व खानकाह शाहे रजा में अफ्तार के दौरान का माहौल गर्मजोशी और प्यार से भरा हुआ था। दरगाह परिसर में विभिन्न समुदायों और धर्मो के लोगों ने एक साथ बैठ कर रोजा इफ्तार किया। यह रोजा अफ्तार सांप्रदायिक सौहार्द और भाईचारे की सच्ची मिसाल बना साथ ही एकता और भाईचारे का दिल को छू लेने वाला नजारा भी देखने को मिला। हर साल 24 वे रोजे को आयोजित होने वाले इस अफ्तार में शामिल होने वाले लोगों ने साम्प्रदायिक सद्भाव और शांति को बढ़ावा दिया।

लखनऊ विश्वविद्यालय और कजाख विश्व-विद्यालय के साथ संभावित सहयोग पर हुई बैठक

ऑनलाइन बैठक

संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ विश्व विद्यालय के अधिकारियों और कजाकिस्तान यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड बिजनेस अस्ताना, कजाकिस्तान के प्रतिनिधियों के बीच अकादमिक सहयोग की संभावनाओं पर एक ऑनलाइन बैठक हुई। बैठक का समन्वय स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, अस्ताना, कजाकिस्तान में भारत के दूतावास द्वारा किया गया था। लखनऊ विश्वविद्यालय की ओर से प्रो आर पी सिंह निदेशक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और अंतर्राष्ट्रीय छात्र सलाहकार, प्रोफेसर अमृतांशु शुक्ला, एडिशनल डीन छात्र कल्याण, डॉ अनीस अहमद, व्यवसाय प्रशासन विभाग, डॉ जीशान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संकाय ने बैठक में प्रतिभाग किया। कजाख प्रौद्योगिकी और व्यवसाय विश्वविद्यालय के डीन और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने कजाख विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। दोनों विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने अपनी विशिष्ट क्षमताओं और पारस्परिक सहयोग पर विस्तार से चर्चा करी। प्रतिनिधियों ने छात्रों के आदान-प्रदान, स्नातकों की इंटर्नशिप, प्रोफेसरों द्वारा व्याख्यान, संयुक्त वैज्ञानिक संगोष्ठियों और सम्मेलनों, संयुक्त प्रकाशनों और वैज्ञानिक पत्रों आदि के मुद्दों पर सहमति व्यक्त की। सहयोग के संभावित क्षेत्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आईटी, पर्यटन और डिजाइन और खाद्य प्रौद्योगिकी, अंग्रेजी भाषा शिक्षण, वित्त और अर्थशास्त्र, प्रबंधन के क्षेत्र होंगे। कजाकिस्तान स्थित भारतीय दूतावास स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक संजय वेदी ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया। डीन एकेडमिक्स प्रो पूनम टंडन, लखनऊ विश्वविद्यालय ने बताया कजाख विश्वविद्यालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए क्षेत्रों में आपसी सहयोग की अपेक्षा कर रहा है। शीघ्र ही दोनों विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों के मध्य होने वाली बैठकों में विस्तार से विचार-विमर्श करके एमओयू तैयार किया जाएगा। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने कहा भारत और विदेशों के संस्थानों के मध्य अकादमिक विचार विमर्श के लिए अनेक संभावनाएं हैं। हमारी शिक्षा और अनुसंधान की स्थिति दुनिया भर से अनेक अनेक विश्विद्यालयों को आकर्षित कर रही है।

टिकट न मिलने पर सपा कार्यकर्ता का हंगामा

सपा ऑफिस के बाहर अखिलेश का पुतला जलाया, मुलायम की फोटो भी आग में डाली

हंगामा

संवाददाता

लखनऊ। नामाकंन के आखिरी दिन समाजवादी पार्टी ने अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी। सोमवार को दोपहर तक पार्टी की तरफसे सिंबल जारी होते रहा। इस दौरान कई लोगों के नाम भी कटे। यहां तक की वर्तमान पार्षद के नाम भी काट दिए गए है। पार्टी महानगर कार्यालय पर इस दौरान लोगों की नाराजगी भी देखने को मिली। यहां तक की कई लोगों ने पार्टी के खिलाफ नारे तक लगाना शुरू कर दिया। टिकट न मिलने से नाराज हुसैनगंज के मुकेश यादव ने सपा प्रदेश कार्यालय के सामने ही अखिलेश यादव का पुतला जला दिया। यहां तक की सपा के लिए पहने जाने वाली अपनी टी-शर्ट तक जला डाली। उसके अलावा नेता जी मुलायम सिंह यादव की फेटो और अपना बायोडेटा तक जला डाला। इस दौरान जमकर पार्टी कार्यालय के बाहर हंगामा भी काटा। मुकेश यादव ने बताया कि पिछले 32 साल से उनका परिवार पार्टी के लिए काम कर रहा है। उसके बाद भी दूसरे लोगों को टिकट दिया जा रहा है। वह भी ऐसे टिकट जारी हो रहे हैं, जिसका कोई जनाधार तक नहीं है। संगठन और पार्टी के अंदर सालों से काम करने वाले लोगों को इग्नोर किया जा रहा है।

एक दिवसीय महावास्तु कार्यशाला का आयोजन, हिन्दू सनातन ज्ञान पर आधारित है महा वास्तु : आचार्य सोमिल

आयोजन

संवाददाता

लखनऊ। महा वास्तु से जीवन की समस्याओं का समाधान संभव है। ये बातें एक दिवसी महावास्तु कार्यशाला में बतायी गयी। आईआईएम रोड स्थित एल्डिको सिटी क्लब हाउस में एक दिवसीय महावास्तु कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें महावास्तु प्रमाणित प्रशिक्षक आचार्य डॉ शालिनी, आचार्य सोमिल व आचार्य प्रखर दीक्षित आदि उपस्थित थे। महावास्तु विशेषज्ञों ने बताया कि जीवन की किसी भी समस्या का समाधान बिना तोड़ फोड़ के सम्भव है। विद्या वही है जो वर्तमान संदर्भ में उपयोगी है, महावास्तु का विज्ञान पूर्णतया हिंदू सनातन ज्ञान पर आधारित है। आचार्यों ने बताया कि हमारा घर 16 दिशा क्षेत्रों में विभाजित है और हर दिशा का अपना गुण धर्म है कोई भी दिशा अच्छी या बुरी नहीं है। कोई भी वास्तु मूलत: 45 ऊर्जाओं से मिल कर बनता है ,और सभी ऊर्जाए जीवन को गतिमान रखने के लिए आवश्यक है। महावास्तु में 32 द्वारों की परिकल्पना है ,कुछ द्वार अच्छे होते है कुछ बुरे ,परंतु महावास्तु में गलत द्वार को बिना तोड़े सुधार किया जा सकता है। कैसे हर व्यक्ति के लिए वास्तु अलग होता है इस पर आचार्य सोमिल ने चर्चा की। उन्हसेनें बताया कि पंच तत्त्वों के संतुलन से घर की सभी समस्याओं का समाधान संभव है। वास्तु सुधार की इस बेहतरीन कार्यशाला के ज्ञान का लाभ बहुत से लोगों ने में उठाया। महावास्तु कार्यशाला में आजमगढ़ से आए आचार्य संदीप, कानपुर से राजकुमार शर्मा व महावास्तु विशेषज्ञ प्रनत, आकाश , सादिया ऐस्ट्रो महावास्तु विशेषज्ञ अनामिका वर्मा ने भी लोगों को उनके घर के नक्शे और ऐस्ट्रो चार्ट पर उपचार के तरीके व सुझाव बताये।

राज्यपाल ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी की नैक ग्रेडिंग हेतु तैयार की समीक्षा

महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित कार्यक्रम कराएं

संवाददाता, लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने राजभवन स्थित प्रज्ञाकक्ष में महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ की नैक ग्रेडिंग हेतु तैयार सेल्फ स्टडी रिपोर्ट का अवलोकन किया। विश्वविद्यालय ने इसके पूर्व वर्ष 2004 में नैक का 'बी प्लस' वर्ष 2012 में 'बी' तथा वर्ष 2018 में 'सी' ग्रेड प्राप्त किया है। अब चौथी बार ग्रेडिंग के लिए एसएसआर तैयार कर रहा है। राज्यपाल ने प्रस्तुतिकरण की बिन्दुवार समीक्षा करते हुए रिपोर्ट को असंतोषजनक बताया। उन्होंने प्रत्येक क्राइटेरिया में व्यापक सुधार

के निर्देश दिए और प्रस्तुतीकरण के सुदृढ़ करने को कहा है। समीक्षा के दौरान विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी के दर्शन और प्रेरणाओं का वातावरण बनाने को कहा है। विश्वविद्यालय के परिसर में महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित कार्यक्रमों का आयोजन कराकर उसमें विद्यार्थियों की प्रतिभागिता करायी जाये। उन्होंने गांधी की स्मृतियों पर बनी वीथिका को प्रस्तुतीकरण में दर्शाने का सुझाव देते हुए कहा 102 वर्ष पुराने इस विश्वविद्यालय का गौरव अपने एसएसआर में दर्शाएं। उन्होंने टीम में नवनियुक्त शिक्षकों और विद्यार्थियों को जोड़ने का निर्देश दिया। राज्यपाल ने टीम के सदस्यों से कहा कि विद्यार्थियों को नैक ग्रेडिंग की उपयोगिता बताएं।

अमिताभ ठाकुर ने सीजेआई को भेजी लेटर पिटीशन

अतीक-अशरफ हत्याकांड की सीबीआई जांच की मांग

जांच की मांग

संवाददाता

लखनऊ। अधिकार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमिताभ ठाकुर ने अतीक अहमद और अशरफकी हत्या के मामले की केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) जांच के लिए सर्वोच्च न्यायालय में रिट याचिका दायर की है। पार्टी की ओर से दी गई जानकारी में बताया गया कि याचिका में अमिताभ ठाकुर ने कहा है कि भले अतीक अहमद और उसका भाई अपराधी हों किंतु जिस प्रकार से उनकी हत्या हुई है वह कई सवाल खड़े करती है। इस हत्या के बाद उत्तर प्रदेश पुलिस ने मामले को ढीला करने का प्रयास किया है और अभी तक कोई भी ठोस कार्रवाई नहीं की है। भले ही कोई व्यक्ति अपराधी क्यों ना हो किंतु किसी भी व्यक्ति की पुलिस अभिरक्षा में हत्या कर दिया जाना किसी भी सभ्य समाज में स्वीकार्य नहीं है। याचिका में कहा गया कि घटना की जांच स्थानीय पुलिस द्वारा नहीं कराई जा सकती। इसकी निष्पक्ष जांच मात्र सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट के पर्यवेक्षण में सीबीआई द्वारा ही की जा सकती है। आपको बता दें कि प्रयागराज के माफिया डॉन अतीक अहमद और उसके भाई अशरफअहमद की गोली मारकर हत्या कर दी। प्रयागराज में मेडिकल के लिए ले जाते समय गोली मारकर इस हत्याकांड को अंजाम दिया गया। दोनों के हाथों में हथकड़ी लगी हुई थी। तीन हमलावरों ने अतीक के सिर में गोली मारी और अशरफ के भी सिर में गोली लगी। हमलावरों ने कई राउंड फायरिंग की। गोली मारने के बाद तीनों हमलावरों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। हमलावर के गले में आईडी कार्ड लटका हुआ था। हमलावर कथित तौर पर मीडिया रिपोर्टर के रूप में आए थे और हमलावरों ने धार्मिक नारे लगाए। हमलावरों के नाम लवलेश तिवारी, सन्नी और अरुण मौर्य बताए जा रहे हैं। माफिया और पूर्व सांसद अतीक अहमद और उसके पूर्व विधायक भाई खालिद अजीम उर्फअशरफकी पुलिस हिरासत में गोली मारकर हत्या किए जाने के मामले की तफ्तीश के लिए उत्तर प्रदेश पुलिस ने तीन सदस्यीय विशेष जांच दल का गठन किया। विशेष पुलिस महानिदेशक (कानून व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने एक बयान में बताया कि प्रयागराज के पुलिस आयुक्ष्त आर के विश्वकर्मा के आदेश पर अपर पुलिस उपायुक्त, अपराध (मुख्य विवेचक) के नेतत्व में तीन सदस्यीय एसआईटी गठित की गई है। उन्होंने बताया कि गुणवत्तापूर्ण तथा समयबद्ध जांच सुनिश्चित करने के लिए तीन सदस्य निगरानी टीम का भी गठन किया गया है। बयान में कहा गया है कि अपर पुलिस उपायुक्त अपराध सतीश चंद्र, एसीपी कोतवाली सत्येंद्र प्रसाद तिवारी और इंस्पेक्टर ओम प्रकाश की टीम बनाई गई है, जो पूरे मामले की जांच करेगी।

सफाई कर्मियों की काम बन्द हड़ताल से फैली गन्दगी

अप्रैल 17 से शुरू हुई है काम बन्द हड़ताल

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

भरथना, इटावा। भरथना नगर पालिका परिषद में ठेका, संविदा, स्थायी रूप से कार्यरत सफाई कर्मचारियों की काम बन्द अनिश्चित कालीन हडताल होने के कारण सम्पूर्ण कस्बा नगर कूडे का ढेर बना हुआ है। नगर के चहुँओर प्रमुख मार्गों सहित गलियों में बिखरा पडा दुर्गन्धयुक्त कूडा व गन्दगी से बिजबिजाती नाला और नालियां आम जनमानस को नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर कर रही है। ज्ञातव्य होकि वेतन,फण्ड, एरियर आदि देयकों का काफी समय से लम्बित भुगतान न होने से क्षुब्ध डेढ सैकडा से अधिक नगर पालिका परिषद के संविदा,ठेका व स्थायी सफाई कर्मचारी काम बन्द कर अनिश्चित कालीन हडताल पर चल रहे हैं। जिसके कारण नगर के प्रमुख मार्ग व मुहल्ले की गलियों में जहाँ चारों ओर कूडा बिखरा पडा है,वहीं कूडे से भरी बिजबिजाती नालियां भी बदबूदार वातावरण उत्पन्न कर रही हैं। भरथना नगर पालिका परिषद में ठेका, संविदा, स्थायी रूप से सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत रमेश चन्द्र,मुरारी लाल, सुशील कुमार, ऋषि कपूर, शिवकुमार, अजय कुमार, नीलम, सुशीला, ममता, गुड्डी, शोभा देवी, रेखा देवी, कुसमा, संगीता, विनीता, सुनीता, गीता, सुनील कुमार, सालिगराम, नीलू, सुरेन्द्र, विनोद कुमार आदि ने बताया कि उन्हें दो माह का वेतन नहीं दिया गया,कई सालों से फण्ड की धनराशि जमा नहीं करायी गई, सातवें वेतन का एरियर भुगतान नहीं किया गया,मँहगाई भत्तों की किस्तों का एरियर नहीं दिया गया,आठ साल से वर्दी नहीं दी गई, 11 सालों से बोनस भी नहीं दिया गया,चार माह से ठेका सफाई कर्मचारियों को वेतन नहीं दिया गया, जिससे हम लोगों का आर्थिक व मानसिक उत्पीडन हो रहा है तथा बेहद परेशानियों का सामना करना पड रहा है। उक्त माँगें पूरी न होने तक हम लोग मजबूरन कामबन्द अनिश्चितकालीन हडताल कर रहे हैं। गौरतलब होकि जहाँ सम्पूर्ण प्रदेश में नगर निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 का बिगुल बजने के साथ नगर पालिका परिषद भरथना में अध्यक्ष और सभासद पदों के लिए नामांकन प्रक्रिया भी प्रारम्भ हो चुकी है। जिसके चलते प्रतिदिन जिला स्तरीय समेत स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों का नगर में आवागमन बना रहता है। बाबजूद उक्त समस्या जस की तस बनी हुई है।

मोबाइल कई गम्भीर बीमारियो की है जड़ : सर्वेश कन्त वर्मा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुलतानपुर । कटका क्लब सामाजिक संस्था के तत्वावधान में जितना हो मजबूरी उतना ही करे काम वरना मोबाइल से दूरी कार्यक्रम का आयोजन ए.के.शिक्षा निकेतन, अगनाकोल में किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता साहित्यकार व शिक्षक सर्वेश कन्त वर्मा ने छात्र -छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि मोबाइल कई गम्भीर बीमारियों की जड़ है इसका सदुपयोग जहाँ मानव जीवन के लिए वरदान है। वहीं इसका दुरुपयोग मानव जीवन के लिए अभिशाप है। मोबाइल का उपयोग अधिक करने से आंखों की रोशनी में कमीं, कानों का बहरापन , याददाश्त की कमी , एकाग्रता में कमीं सोचने समझने की क्षमता में ह्रास, सिर दर्द, ब्रेन हेमरेज आदि बीमारियाँ हमारे जीवन को दुरूखदायी बना देती हैं । इस लिए मोबाइल का प्रयोग हमें अत्यधिक नहीं करना चाहिए जितना परम आवश्यक हो मोबाइल का उपयोग उतना ही करें। इस मौके पर उपस्थित कटका क्लब सामाजिक संस्था के अध्यक्ष सौरभ मिश्रा ने कहा कि आज युवा अपना अधिकांश समय सोशल मीडिया पर व्यतीत कर रहा है । अपने समय, स्वास्थ्य और धन की तीनों की बर्बादी कर रहा है। मौजूदा दौर में युवा मोबाइल को ही लाइब्रेरी समझता है और किताबों से दूरी बनाता जा रहा है। युवाओं से अपील करते हुए उन्होंने कहा कि हम किसी भी समस्या का समाधान गूगल पर नहीं बल्कि किताबों में ढूंढे । कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यालय प्रबंधक शीतला प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि अति सदैव विनाश की ओर अग्रसर होती है हम सभी मोबाइल का सामान्य रूप से उपयोग करें और अपना बहुमूल्य समय अपने कैरियर और अपने जीवन को बेहतर बनाने में करें । इस मौके पर उपस्थित प्रधानाध्यापिका आरती पाण्डेय, बनमाई राजेश कुमार वर्मा , संतोषी यादव, पूजा मिश्रा, प्रतिमा जायसवाल, खुशनूर जहाँ, लाल बहादुर यादव, शेर मोहम्मद, प्रदीप कुमार, अभिषेक कुमार, आदि लोग उपस्थित रहे ।

सरकारी दफ्तरों में सफाई कर्मी बने हैं बाबू, तैनाती स्थल गांवों में छाया गंदगी का अंबार

❑ गांवों में सफाई के नाम पर सरकारी खजाना हो रहा साफ, फिर भी जिम्मेदार अनजान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। टडियावां ब्लॉक क्षेत्र में तैनात सफाई कर्मी ग्राम प्रधान व विभागीय अधिकारियों के संरक्षण के चलते तैनाती स्थल गांवों में नियमित रूप से सफाई न करवा कर सरकारी दफ्तरों में बाबू बनकर बैठे हुए हैं,तो कहीं अधिकारियों के ड्राईवर बनकर अधिकारियों की गाड़ी चलाते नजर आ रहे हैं। कुछ सफाई कर्मी गांवों में तो लेबर लगाकर कभी कभार सफाई करवा देते हैं,लेकिन सभी कर्मियों उनके क्षेत्र में पड़ने वाले परिषदीय स्कूलों में भी साफ सफाई करने के निर्देश है,परंतु यहां सफाई कर्मी परिषदीय स्कूलों में सफाई करना मुनासिब नहीं समझते हैं। जिसके कारण ग्राम सभाओं सहित स्कूलों व स्कूल के आस पास में भी जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हैं। सफाई न होने से गंदगी के कारण नालियां चोक हो गई है,साथ ही गंदगी के कारण संक्रामक बीमारी तेजी से फैल रही है। जबसे ग्राम सभाओं में सफाई कर्मियों की तैनाती हो गई है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार यहां टड़ियावां ब्लॉक की ग्राम पंचायत गुरसंडा, गढ़ी, सिकंदरपुर, टड़ियावां खास दर्जनों ग्राम सभाओं में सफाई कर्मी तो तैनात हैं,परंतु वह तैनाती स्थल पर न जाकर गांवों में बगैर सफाई करें, सरकारी तनख्वाह उठा रहे हैं। टड़ियावां ब्लॉक की 68 ग्राम पंचायत में तैनात सफाई कर्मियों में से अधिकांश सफाई कर्मी एडीओ पंचायत व बीडीओ, डी. पी. आर. ओ. सहित अन्य अधिकारियों के पीआरओ, ड्राइवर, रसोईया, सरकारी दफ्तर में बाबू, कंप्यूटर ऑपरेटर के रूप में सेवा दे रहे हैं। यह सभी ग्राम प्रधान व विभागीय अधिकारियों के संरक्षण में कागजों पर ग्राम सभा में सफाई कार्य कर रहे हैं, और प्रदेश व केंद्र सरकार की महत्वपूर्ण योजना स्वच्छता अभियान को कागजों पर दर्शा कर प्रदेश सरकार सहित जिले के जिलाधिकारी के नियमों व आदेशों को ठेंगा दिखाते नजर आ रहे हैं। वर्तमान में गर्मी मौसम आते ही जगह-जगह गंदे पानी का भराव व कीचड़ से नालियां बजबजा रही जो मच्छरों को पैदा कर संक्रामक बीमारियां बढ़ा रही है, और कूड़ा करकट से उठ रही दुर्गंध भी बीमारियों को न्योता दे रही है। शासन प्रशासन द्वारा करोड़ों रुपए खर्च कर प्रत्येक ग्रामसभा में कूड़ा घर बनाए गए हैं, जो केवल शोपीस बने हैं। संसाधनों के अभाव में घरों का निकलने वाला कूड़ा, कूड़ाघरों में पहुंचने की योजना धड़ाम हो गई है। कूड़ा निस्तारण के नाम पर केवल खानापूर्ति कर कर्तव्य की इस्त्री की जा रही है। हालांकि ग्रामीणों के काफी विरोध व ग्राम सभाओं की उच्च अधिकारियों द्वारा जांच,निरीक्षण की खबर मिलने के बाद कभी कभार सफाई कर्मी लेबर से सफाई कार्य कराकर खानापूर्ति कर लेते हैं।

सड़क किनारे पड़ा मिला पी आरडी जवान का शव

एएसपी बोले- अज्ञात वाहन की टक्कर से हुई पीआरडी जवान की मौत

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। कासिमपुर इलाके में एक पीआरडी जवान का शव पड़ा मिला है। जिसकी पहचान रामभजन विश्वकर्मा के रूप में हुई है। पीआरडी जवान बाइक पर सवार होकर घर जा रहा था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताया गया कि कासिमपुर थाना क्षेत्र के गुलाबी खेड़ा में एक पीआरडी जवान का शव पड़ा मिला है। राहगीरों ने जिसके शव को सड़क किनारे पड़ा देखा तो पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर शिनाख्त का प्रयास किया। जिसमें पीआरडी जवान के शव की पहचान रामभजन विश्वकर्मा के रूप में हुई है। वह ड्यूटी करके बाइक से घर जा रहा था। इसी दौरान अज्ञात वाहन की टक्कर से वह नीचे गिर गया। जिसमें पीआरडी जवान की दर्दनाक मौत हो गई है। पुलिस शव कब्जे में लेकर जांच में जुटी है। एएसपी पूर्वी नृपेंद्र कुमार ने बताया कि कासिमपुर इलाके में एक पीआरडी जवान का शव मिला है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले में पीएम रिपोर्ट के आधार पर विधिक कार्रवाई की जाएगी

जीआरपी परिसर में निकला सांप मचा हड़कंप

स्कॉन सचिव ने रेस्क्यू कर प्राकृतिकवास में छोड़ा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। इटावा नगर क्षेत्र के अंतर्गत राजकीय रेलवे पुलिस जीआरपी थाना इटावा पर काला सांप निकलने से हड़कम्प मच गया। संजय खरवार प्रभारी निरीक्षक द्वारा पर्यावरण एवं वन्यजीव पर कार्य कर रही संस्था सोसाइटी फॉर कंजर्वेशन ऑफनेचर (स्कॉन) सचिव वन्यजीव विशेषज्ञ जिला संयोजक संजीव चौहान को अवगत कराया। उन्होंने वन विभाग को सूचना देते हुए स्कॉन रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंच कर देखा कि कोबरा सांप कोने में बैठा हुआ है। सुरक्षित कोबरा सांप को पकड़ा जा सका। संजीव चौहान ने बताया कि यह स्पेक्टकिल कोबरा है जिसे लोग फन वाला काला सांप,नाग व नागराज भी कहते है।प्रभागीय निदेशक अतुल कांत शुक्ला के निर्देशन में कोबरा सांप को सकुशल प्राकृतिकवास में छोड़ दिया गया। संस्था स्कॉन द्वारा शहर व ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम का ही असर है जोकि वन्यजीवो के प्रति व्यक्ति जागरूक हो गये हैं पहले लोग जानकारी के अभाव में सांपों व अन्य जीवो को नुकसान पहुंचा देते थे लेकिन अब ऐसा नहीं है। बचाव अभियान में वन विभाग व रेलवे पुलिस थाना प्रभारी निरीक्षक संजय खरवाल,हैंड कांस्टेबल जगपाल यादव,शैलेंद्र कुमार व सचिन का सहयोग रहा।

मरीजों को मिलने वाली दवाईयां कूड़ा ढेर की बढ़ा रही शोभा

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

हरदोई। टडियावां ब्लॉक स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सकों की लापरवाही से मरीजों को मिलने वाली दवाईयां कूड़ा ढेर की शोभा बढ़ा रही है। यहां ब्लॉक व कस्बा टड़ियावां स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों को निशुल्क मिलने वाली दर्जनों प्रकार की कई पैकेट दवाईयां सीएचसी परिसर में लगे कूड़े के ढेर में दिखाई दे रही है। कूड़े में डाक्टरों द्वारा फेकी गई कई दवाईयां अभी इक्सापायर भी नहीं हुई है। कूड़े में दवाईयां डालने के बाद अधिक कूड़ा इकठ्ठा होने पर कूड़े के साथ जला दी जा रही है। जबकि प्रदेश सरकार सभी को फ्री इलाज फ्री दवाईयां उपलब्ध कराने के लिए अरबों रुपए प्रति वर्ष खर्च कर रही है। जिसके बाद भी यहां टड़ियावां सीएचसी के डॉक्टर लापरवाही बरतते हुए मरीजों को दवाई वितरण न करके कूड़े के ढेर में फेक रहे हैं,जिससे तीमारदार मरीजों को मजबूरन प्राइवेट मेडिकलों से मंहगे दामों में दवाईयां खरीदनी पड़ती हैं। सीएचसी टड़ियावां में बने कूड़ा घर हुए शोपिश। सरकार द्वारा करोड़ों रुपए खर्च अस्पताल परिसर में कूड़ा घर बनाया गया है। जिसमे सटर बंद होने के कारण अस्पताल के कर्मचारी खुले में कूड़ा डालकर उसे जला देने का कार्य करते हैं। सीएचसी अधीक्षक डा. सुशील कनौजिया ने बताया कि उनको कूड़े में दवाई पड़ी होने की जानकारी नहीं ह।

कर्मचारियों की समस्या को लेकर जिला विद्यालय निरीक्षक से मिला संगठन

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सुल्तानपुर। माध्यमिक शिक्षक संघ ठाकुराई गुट का एक प्रतिनिधि मंडल जिलाध्यक्ष शिवनंदन यादव एवं जिला मंत्री डॉ अजय कुमार सिंह के अगुवाई में जिला विद्यालय निरीक्षक सत्येंद्र कुमार सिंह से मिला। जिला अध्यक्ष शिवनंदन यादव ने जिला विद्यालय निरीक्षक से एनपीएस के अवशेष नियोक्ता अंशदान अप्रैल 2005 से अप्रैल 2018 की राशि एकमुश्त एवं उस पर आगणित धनराशि को अद्यतन तक संबंधित शिक्षक और कर्मचारियों के खाते में स्थानांतरित करने की बात कही। जिला मंत्री डॉ अजय कुमार सिंह ने जिला विद्यालय निरीक्षक से कहा की शिक्षकों के वेतन से प्रति माह की जा रही एनपीएस कटौती की अभिदाता और नियोक्ता अंशदान की राशि पिछले लगभग बारह माह से शिक्षकों के खाते में जमा नहीं कराया गया है।इस राशि को संबंधित शिक्षक एवं कर्मचारी के खाते में जमा कराई जाय। जिला विद्यालय निरीक्षक सत्येंद्र कुमार सिंह ने माध्यमिक शिक्षक संघ ठाकुराई गुट के प्रतिनिधिमंडल की बात को गंभीरता से सुनते हुए लेखाकार राजेश कुमार से कहा कि सभी विद्यालयों के लिए पत्र बनाइए, जिसमे उल्लेख कीजिए की सभी प्रधानाचार्य अपने विद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की एनपीएस अवशेष राशि का आकलन कर तत्काल कार्यालय को उपलब्ध कराएं। अन्यथा की स्थिति में संबंधित विद्यालय के प्रधानाचार्य और लिपिक के अप्रैल माह का वेतन बाधित किया जाएगा और जिन विद्यालयों से शिक्षक एवं कर्मचारियों के एनपीएस राशि का अवशेष आकलन प्रस्तुत किया जाता है। उस आकलन राशि का परीक्षण कर तत्काल शिक्षक कर्मचारी के खाते में हस्तांतरित करा दिया जायेगा। प्रतिनिधि मंडल में रमेश कुमार वर्मा, धर्मेंद्र पांडे, अमरनाथ यादव,सुरजीत राणा, मनोज कुमार वर्मा, राकेश मौर्या आदि उपस्थित थे।

दिल्ली पुलिस का दरोगा जबरन मकान पर कर रहा कब्जा

युवक ने जान-माल की सुरक्षा की लगाई गुहार

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

गाजियाबाद । गिरधर एनक्लेव साहिबाबाद में रहने वाले एक युवक ने खुद को दिल्ली पुलिस का दरोगा बताने वाले एक दबंग से सुरक्षा की गुहार लगाई है। पीड़ित अरुण कुमार नाम के युवक का आरोप है कि दिल्ली पुलिस का दरोगा उनके मकान पर जबरन कब्जा करना चाहता है। थाना पुलिस भी उनकी सुनवाई नहीं कर रही। पीड़ित अरुण कुमार ने इस संबंध में एक प्रेसवार्ता करके जान माल की सुरक्षा की गुहार लगाई है। अरुण का कहना है कि जिस मकान में वह रह रहा है उसे उनकी मां मधु शर्मा ने खरीदा था। माता और पिता की मृत्यु हो चुकी है और अरुण ने अभी विवाह नहीं किया है। इसलिए वह मकान का अकेला मालिक है।

पीड़ित ने बताया कि 10 अप्रैल की सुबह एनक्लेव में

रहने वाला अरविंद चौधरी जो खुद को दिल्ली पुलिस का दरोगा बताता है, वह उनके घर में घुस आया और पूछने लगा कि मकान कब खाली करोगे। आज उन्हें गृहप्रवेश करना है। इसके लिए सभी तैयारियां हो चुकी हैं और कार्ड भी बंट चुके हैं। यह सुनकर अरुण सकते में आ गया। उनका कहना है कि उन्होंने मकान बेचा ही नहीं तो फिर किसी ने खरीद कैसे लिया। अरुण के मुताबिक अरविंद ने उनके साथ मारपीट की और लोगों को बुलाकर समान सहित घर से बाहर फिकवाने की बात कहते हुए चला गया। इसके बाद उन्होंने एन्कलेव की आरडब्ल्यू पदाधिकारी से भी शिकायत की। आरडब्ल्यूए के अधिकारियों ने बताया कि गृहप्रवेश का कार्ड उनके पास भी आया है। अरुण ने इस मामले में साहिबाबाद थाने में भी शिकायत की, लेकिन पुलिस ने कोई कारवाई नहीं की। अरुण का कहना है कि इस मामले में वह सीएम पोर्टल पर भी शिकायत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मकान पर कब्जे के लिए उनकी हत्या भी करवाई जा सकती है। अरुण ने पुलिस से उनकी जान-माल की सुरक्षा की गुहार लगाई।

उत्कृष्ट कार्य के लिए अधिकारी लखनऊ में सम्मानित

❑ राज्यस्तरीय प्रतिरक्षण अधिकारी-वैक्सीन कोल्ड चौन मैनेजर हुए पुरस्कृत

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

इटावा। कोरोना से बचाव के लिए शुरू हुए टीकाकरण अभियान के दौरान वैक्सीन के कुशल प्रबंधन, इलेक्ट्रॉनिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क (ई-विन) एवं कोविड वैक्सीनेसन में उत्कृष्ट कार्य करने पर मंगलवार को राज्य स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की मिशन निदेशक डॉ0अपर्णा उपाध्याय ने जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ0 श्रीनिवास और डिस्ट्रिक्ट वैक्सीन कोल्ड चेन मैनेजर प्रवेश मिश्रा को मोमेंटो व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। लखनऊ में आयोजित प्रदेश स्तरीय इलेक्ट्रानिक वैक्सीन इंटेलिजेंस नेटवर्क (ई-विन) की कार्यशाला में टीकाकरण रखरखाव को बेहतर तरीके से बताया गया। यह जानकारी जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ0 श्रीनिवास ने दी है। डॉ0श्रीनिवास ने बताया की कोरोना संक्रमण के दौरान केंद्र सरकार ने को-विन एप लांच किया था। इस एप में कोरोना वैक्सीन लगवाने वाले लाभार्थी के विषय में समस्त जानकारी भरी जाती थी,इसी के बाद उसे स्लॉट एलॉट होता था और टीका लगता था। इस तरह कोरोना से संबंधित कोविशील्ड, कोवैक्सीन और नियमित टीकाकरण की वैक्सीन का रखरखाव और वितरण की स्थिति के बारे में सीधी मॉनीटरिंग की गई। संक्रमण काल में यूएनडीपी के वीसीसीएम प्रवेश मिश्रा ने वैक्सीन के रखरखाव की जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से निभाई। इसके अलावा नियमित टीकाकरण की वैक्सीन के रखरखाव में भी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ गीताराम का कहना है की वैक्सीन के बनने से लेकर लाभार्थी तक पहुंचने तक उसे एक लम्बा सफर तय करना पड़ता है।

नगर निकाय में खटीक सपा का समर्थन करेगा : चक

समिति के खटीक नेता प्रचार प्रसार जुट

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

भरथना, इटावा। राष्ट्रवादी खटीक विकास समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष एक्स डीजी पुलिस एस एन चक ने कहा है कि नगर निकाय निर्वाचन में इस वार प्रदेश का खटीक समाज समाजवादी पार्टी के पक्ष में खुलकर वोट और सपोट करेगा। उत्तर-प्रदेश के रिटायर्ड पुलिस महानिदेशक व अंबेडकर विचारक दलित नेता श्री चक सोमवार-मंगलवार दो दिन के इटावा दौरे पर पहुँचे थे। श्री चक भरथना स्थित मोहल्ला श्री नगर स्टेशन रोड निवासी श्रीकृष्ण स्वरूप चक के आवास पर पहुँचे,जहाँ मौजूद खटीक समाज के पदाधिकारियों व सजातीय बन्धुओं ने पुष्पहार पहना कर उनका गर्मजोशी से जोरदार स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर सजातीय नेताओं को निर्देशित करते हुए श्री चक ने कहा कि बीते माह 28 मार्च को राष्ट्रवादी खटीक विकास समिति के 25 बर्ष पूर्ण होने पर कानपुर के लाजपत भवन में आयोजित रजत जयन्ती समारोह में बतौर मुख्यतिथि पधारे पूर्व मुख्यमंत्री सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव व विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद सपा के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व मंत्री शिवपाल सिंह यादव के समक्ष भारत के संविधान को बचाने का लिया गया सामूहिक संकल्प के तहत अब खटीक समाज भाजपा सरकार का जमकर विरोध करेगा,और समाजवादी पार्टी का खुलकर प्रचार प्रसार करेगा समर्थन करेगा। उन्होंने समिति के सभी खटीक नेताओं से कहा है कि वे नगर निकाय निर्वाचन में समाजवादी पार्टी के समर्थन में प्रचार प्रसार में जुट जाएं।इसके उपरान्त राष्ट्रवादी खटीक विकास समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चक इटावा जनपद में पूर्व में घटित हुई विभिन्न दु:खद घटनाओं को संज्ञान में लेते हए मृतक परिजनों के आवास किशनपुरा, ऊसराहार, भरथना, बाबरपुर आदि स्थानों पर पहुँचे और दुखी परिजनों को ढांढस बंधाते हुए मृत आत्मा के प्रति शोक सम्बेदना व्यक्त की।

प्रदेश स्तरीय मैराथन में स्वर्ण पदक हासिल कर बढ़ाया जिले का मान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज रायबरेलीकस्बे के स्वदेश सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज के छात्र ने प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में लंबी कूद,100 मीटर दौड़ एवं 10 किलोमीटर की मैराथन दौड़ प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक हासिल कर क्षेत्र सहित जिले का गौरव बढ़ाया है। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार द्वारा सम्मान समारोह का आयोजन कर छात्र योगेश को खेल गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। क्षेत्र के अजीजगंज मजरे बावन बुजुर्ग बल्ला गांव निवासी योगेश स्वदेश सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज में इंटर के छात्र हैं।पढ़ाई के साथ ही खेल कूद में विशेष रुचि होने के चलते विद्यालय के प्रधानाचार्य वीरेन्द्र वर्मा व अध्यापकों द्वारा उसे शिक्षा के साथ ही खेल कूद में भी प्रोत्साहित किया गया। इसी का नतीजा रहा कि लखनऊ में गत सप्ताह आयोजित ओपन मैराथन प्रतियोगिता में छात्र योगेश ने तीन - तीन स्वर्ण पदक हासिल किया। स्वर्ण पदक हासिल करने पर विद्यालय परिवार द्वारा मंगलवार की प्रार्थना बेला में कार्यक्रम का आयोजन कर योगेश को खेल गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला सहसंघ चालक डीबी सिंह ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में चयन पर योगेश को बधाई देते हुए छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि असफलता से मत घबराओ, स्वयं पर दृढ़ विश्वास रखते हुए आगे बढ़ो सफलता अवश्य मिलेगी। प्रधानाचार्य वीरेन्द्र वर्मा ने कहा कि ज्ञान, चरित्र व अनुशासन की त्रिवेणी से ही शिक्षा का तीर्थराज प्रयाग बनता है।समय का सदुपयोग एवं जो भी कार्य करो उसे पूरी निष्ठा व इमानदारी से करो तभी सफलता मिलेगी। सम्मान समारोह के दौरान प्रतिष्ठित व्यवसाई प्रभात जायसवाल उर्फ बन्नू ने छात्र योगेश को 21 सौ की नकद धनराशि देकर सम्मानित किया।इस अवसर पर जिला कुटुंब प्रबोधन प्रमुख रमेश अवस्थी, राकेश मिश्रा व अन्य अध्यापक सहित छात्र-छात्राएं एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

शिक्षिका की साइकिल व हैंडबैग चोरी

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महराजगंज, रायबरेली। कस्बे के आनंद नगर मोहल्ले में कपड़े की नाप दे रही शिक्षिका की लेडीज साइकिल व साइकिल पर टंगा हैंडबैग लेकर अज्ञात चोर फरार हो गये। बीच बाजार दिन दहाड़े हुई घटना से हड़कंप मच गया। शिक्षिका की सूचना पर पहुंची पुलिस अज्ञात चोर की तलाश शुरू कर दी, समाचार लिखे जाने तक पुलिस चोर का सुराग नहीं लगा सकी। कोतवाली क्षेत्र के बालीपुर मजरे कुसमहुरा गांव निवासी शांति पुत्री राम दुलारे यादव खेरवा स्थित सुबेदार मेजर रामफल सिंह इंटर कालेज में शिक्षिका हैं।कपड़े सिलवाने व अन्य घरेलू कार्य से शिक्षिका मंगलवार की दोपहर महराजगंज बाजार आईं। शिक्षिका के अनुसार कस्बे के आनंद नगर मोहल्ले में कपड़े की दुकान पर नाप देने के लिए साइकिल व साइकिल में लेडीज हैंडबैग टंगा छोड़ कर वह नाप देने लगी। इसी बीच किसी ने हैंडबैग टंगी साइकिल पार कर दी। हैंडबैग में हाईस्कूल, इंटर व बीए की मार्कशीट तथा बैग में रखा एंड्रॉयड फोन , एक जोड़ी पायल व 1500 रुपए नकदी थी जिसे अज्ञात चोर ने पार कर दी। बीच बाजार दिन दहाड़े हुई घटना से हड़कंप मच गया। शिक्षिका द्वारा कोतवाली पुलिस को लिखित सूचना देने के बाद हरकत में आई पुलिस अज्ञात चोर की तलाश कर रही थी।

इंद्रमणि सिंह राष्ट्रीय महासचिव मनोनीत

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

महाराजगंज, रायबरेली। भारती राष्ट्रीय लोकमन्च पार्टी की प्रदेश अध्यक्षा महिला मोर्चा की अनुशंसा पर इंद्रमणि सिंह को राष्ट्रीय महासचिव का पद सौंपा गया। महासचिव बनाए जाने की खबर मिलते ही कस्बा वासियों द्वारा टेलीफोन के जरिए बधाई संदेश देने का तांता लगा रहा। बताते चले भारतीय राष्ट्रीय लोकमंच पार्टी महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष शिखा सिंह की अनुसंसा से इंद्रमणि सिंह को युवा मोर्चा का राष्ट्रीय महासचिव बनाया गया।राष्ट्रीय महासचिव बनाए जाने की खबर संगठन के लोगों को मिलते ही शुभचिंतकों द्वारा इंद्रमणि सिंह को फूल माला पहना लड्डू खिलाकर बधाई दिया। स्वागत सम्मान से अभिभूत नवनिर्वाचित राष्ट्रीय महासचिव इंद्रमणि सिंह ने कहा की अन्याय के खिलाफलड़ाई में संगठन के कंधे से कंधा मिलाकर चलने के साथ साथ भारतीय राष्ट्रीय लोकमंच पार्टी के युवाओं के कंधो को आगे बढ़ाने,सम्मान दिलाने सहित आदि कार्य में बढ़ चढ़ कर हिस्सा दिलाया जायेगा।इस दौरान देवेंद्र प्रताप सिंह उर्फ नीलू सिंह,अमित सिंह,अजीत सिंह,ऋषि सिंह,अनुपम जायसवाल,मंगली सिंह, मान सिंह सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

शिक्षक अपने कार्यों से कभी नहीं होता सेवानिवृत्त- वीरेंद्र सिंह

❑ उच्च प्राथमिक विद्यालय दुसौती की शिक्षिका मीना श्रीवास्तव का हुआ सम्मान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

रायबरेली। एक शिक्षक कभी भी अपने कार्यों से सेवानिवृत्त होता है। वे समाज मे नित्य ज्ञान की रोशनी फैलाता रहता है। उक्त बात राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिलाध्यक्ष एवं सभापति सोसाइटी वीरेन्द्र सिंह ने सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक मीना श्रीवास्तव के सम्मान समारोह के दौरान कहीं। उनका विदाई समारोह मंगलवार को अमावां के ग्राम सचिवालय में किया गया। शिक्षक सम्मान समारोह और संकुल बैठक की शुरुआत कम्पोजिट विद्यालय अमावां की छात्राओं की तरफ से सरस्वती वंदना प्रस्तुत करने के साथ हुई। इस दौरान एआरपी अब्दुल मन्नान , एआरपी डॉ. एस एस श्रीवास्तव ने बैठक उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक मीना श्रीवास्तव के द्वारा की गई उत्कृष्ट कार्य और सेवा को सभी ने सराहा। संकुल के सभी शिक्षकों ने उनको रामायण की प्रति,राम मंदिर तथा अन्य उपहारों के साथ सम्मानित किया। इस अवसर पर संकुल के ग्राम सभा घुराडीह के प्रधान दिनेश सिंह, ग्राम प्रधान दुसौती राजेंद्र सिंह, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अमावां गया को उनके अच्छे कार्यों के लिए एवं बेसिक शिक्षा के प्रति सहयोग के लिए अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, उपहार के साथ सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिलाध्यक्ष एवं सभापति सोसाइटी वीरेन्द्र सिंह ने शिक्षक के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि शिक्षक का सम्मान संकुल अमावां के शिक्षकों की तरफसे अच्छी तरीके से किया जा रहा है। कार्यक्रम का सफल आयोजन एवं संचालन नोडल शिक्षक रणविजय सिंह गंगापारी ने किया। इस अवसर पर अरुणा मिश्र, अंजू श्रीवास्तव, उमा सिंह, सूर्य प्रकाश श्रीवास्तव, राजीव शुक्ला, अतुल पाल, सरिता सिंह, फरह हाशमी, बबिता सिंह, विजय सिंह, शशी, नीरू, पुनीत कौशिक, हरिकेश सोनी एवं संकुल के सभी शिक्षक उपस्थित रहे।

ईद-उल-फितर के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने ईद गाह का निरीक्षण कर दिए निर्देश

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित वीसी कक्ष में ईद-उल-फित्तर की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये कि ईद-उल-फित्तर के दृष्टिगत समस्त व्यवस्थाएं समय से पूर्ण करना सुनिश्चित की जाये। उन्होंने अधिशासी अभियन्ता जल निगम नगरीय को निर्देश दिये कि सड़कों के रिस्टोरेशन का कार्य बुधवार तक पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। कार्यदायी संस्था एवं अधिशासी अभियन्ता जल निगम नगरीय को चेतावनी देते हुये जिलाधिकारी ने कहा कि रिस्टोरेशन कार्य में लापरवाही पाये जाने पर कड़ी विधिक कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने कहा कि जनता को कोई भी समस्या नही होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग के अधिकारियों को विद्युत की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने नगर निगम के अधिकारियों को साफ-सफाई व्यवस्था, चूना छिड़काव आदि कराये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने ईद गाह मार्ग में पड़ने वाले सभी गड्ढों को भरवाने के निदेश दिये। जिलाधिकारी ने कहा कि ईद-उल-फित्तर के त्यौहार को सद्भव एवं भाई चारे के साथ मनाये। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार की अफवाहो पर ध्यान न दें। जिलाधिकारी ने कहा कि कानून व्यवस्था बिगाड़ने का प्रयास करने वालों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक एस आनन्द ने बताया कि सुरक्षा हेतु कड़े प्रबन्ध किये गये हैं। सभी मस्जिदों के पास प्रर्याप्त सुरक्षा बल तैनात किया जायेगा। उन्होंने सभी को ईद की बधाई देते हुये कहा ईद-उल-फित्तर के दौरान कोविड नियमों का पालन अवश्य करें। उन्होंने कहा कि प्रशासन जनपद में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए कटिबद्ध है। अगर किसी भी प्रकार की समस्या आती है तो तत्काल उच्च अधिकारियों को सूचित करें। जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने उपस्थित सभी लोगों को आगामी त्योहारों की शुभकामनाएं देते हुए सभी को आश्वस्त किया कि जो भी समस्याएं हैं, उनका त्यौहार से पहले ही यथासंभव समाधान कर लिया जाएगा। बैठक में मौजूद सभी धर्मों के धर्मगुरुओं व गणमान्य नागरिकों ने आश्वस्त किया कि प्रशासन द्वारा दिए गए निर्देशों व नियमों का अनुपालन किया जाएगा।

बैठक में नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, एडीएम प्रशासन श्री संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट डा0 वेद प्रकाश मिश्र सहित सम्बन्धित अधिकारी, गणमान्य नागरिक व धर्मगुरू मौजूद रहे।

इसके उपरान्त जिलाधिकारी ने ईद गाह का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी एवं आवश्यक निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिये। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक एस आनन्द, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा, एडीएम प्रशासन संजय कुमार पाण्डेय, नगर मजिस्ट्रेट डा0 वेद प्रकाश मिश्र सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने नामांकन कक्षों का निरीक्षण कर देखी व्यवस्थाएं

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

शाहजहाँपुर। जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने नामांकन कक्षों का निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी एवं राज्य निर्वाचन आयोग उ0प्र0 द्वारा जारी निर्देशों का पालन सुनिश्चित करते हुये नामांकन प्रक्रिया पूर्ण कराने हेतु सभी अधिकारियों को निर्देशित किया उन्होंने कहा कि निष्पक्ष स्वतंत्र एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन सुनिश्चित कराने हेतु सभी अधिकारी पूर्ण मनोयोग से दिये गये दायित्वों का निर्वहन करें। निर्वाचन कार्यो में अनुपस्थित रहने वाले कार्मिकों के विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज कराने हेतु जिलाधिकारी द्वारा निर्देश दिये गये थे उक्त के क्रम में नगरपालिका तिलहर के रिटर्निंग ऑफिसर जितेंद्र सिंह (सहायक अभियंता) द्वारा अनुपस्थित रह कर निर्वाचन कार्य में घोर लापरवाही बरती गई है, इनके विरुद्ध नोटिस जारी करते हुए प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराने एवं विभागीय कार्रवाई किए जाने की कार्रवाई की जा रही है। इनके स्थान पर मानवेंद्र सिंह को रिटर्निंग ऑफिसर के रूप में तैनात कर दिया गया।

नगर निगम वार्ड संख्या 21 से 25 हेतु तैनात रिटर्निंग ऑफिसर दिवाकर शर्मा (प्रधानाचार्य एलपीजेपी इण्टर कालेज तिलहर) के अनुपस्थित पाए जाने पर इनके विरुद्ध लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 134 के अन्तर्गत प्रथम सूचना रिपोर्ट थाना सदर बाजार में भेजी गई है तथा मुकदमा दर्ज कराने की कार्यवाही की जा रही है। इनके अनुपस्थित रहने से निर्वाचन कार्य प्रभावित हुआ है, जो घोर लापरवाही है, जानबूझकर फोन स्विच ऑफकर गायब हैं, इसलिए मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। जिला विद्यालय निरीक्षक को भी विभागीय कार्यवाही के लिए पत्र प्रेषित किया जाएगा।

सिद्धार्थ वेल्फेयर सोसाइटी ने रक्तदान देकर बचाई एक मरीज की जान

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ कस्बे से संचालित संस्था सिद्धार्थ वेलफेयर सोसाइटी के कार्यकर्ताओ ने एक बार फिर मरीज की जान बचाने में सफलता हासिल की है। नगर पंचायत शोहरतगढ़ के गड़ाकुल निवासी संजय की पत्नी शांति हॉस्पिटल बर्डपुर में भर्ती थी,डिलवेरी केस में मरीज को एक यूनिट ब्लड की आवश्यकता थी,जरूरतमंद मरीज को कहीं खून का इंतजाम नहीं हो पा रहा था।मरीज के परिजनों ने सिद्धार्थ वेलफेयर सोसाइटी संस्था के महासचिव श्यामसुंदर चौधरी को सूचना दी। शश्यामसुंदर चौधरी जी की सूचना पर तत्काल सिद्धार्थ वेलफेयर सोसाइटी कार्यकारिणी सदस्य,समाजसेवी राहुल पटेल जी ने जिला अस्पताल सिद्धार्थनगर ब्लड बैंक में पहुंचकर मरीज को एक यूनिट रक्तदान किया,मरीज को आगे भी हरसंभव मदद करने का भरोसा दिलाया।सिद्धार्थ वेलफेयर सोसाइटी प्रबंधक वकार मोईज खान ने अपने संस्था के सदस्य राहुल पटेल के सराहनीय कार्य की प्रशंसा की है,कार्यकारिणी सदस्य हिमांशु गुप्ता ने आज निस्वार्थ रूप से मानवता व सामाजिक समरसता की अनूठी मिसाल पेश की है,हमारा उद्देश्य है समाज की मदद व सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देना है।

विश्व लिवर डे (19 अप्रैल) पर विशेष

लिवर शरीर का पावर हाउस, इसका ख्याल रखे

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

उरई (जालौन)। लिवर को मानव शरीर का पावर हाउस माना जाता है। यदि पावर हाउस ही ठीक नहीं रहेगा तो व्यक्ति को कई तरह की बीमारियां घेर लेती है। लिवर की देखभाल करने के लिए अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना होगा। यह कहना है मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ एनडी शर्मा ने बताया कि लिवर शरीर के महत्वपूर्ण अंगों में एक है। बदलती जीवनशैली और खराब खाने पीने की आदतों के कारण व्यक्ति लिवर की समस्या का शिकार हो रहा है। लिवर कमजोर होने से वह ठीक से काम नहीं करता है और जिसकी वजह से व्यक्ति फैटी लिवर, लिव रइंफेक्शन और हेपेटाइटिस जैसी बीमारियों का शिकार हो जाता है अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ वीरेंद्र सिंह बताते है कि पेट के दाहिने और उपरी हिस्से में लिवर मौजूद होता है। शरीर में जाने वाले भोजन को पचाने में भी लिवर की अहम भूमिका होती है। लिवर खराब होने से व्यक्ति की कार्यक्षमता पर बहुत बड़ा असर होता है। लिवर का मुख्य काम कार्बोहाइड्रेट, वसा और प्रोटीन का व्यवस्थित करना होता है। लिवर में ग्लूकोज का भंडार होता है। वह शुगर की कमी को दूर करता है। लिवर में समस्याओं के कारण व्यक्ति धीरे-धीरे कई तरह की शारीरिक बीमारियों का शिकार होने लगता है।

व्यापारी के साथ धोखाधड़ी करने वाले तीनों आरोपियों को भेजा जेल

स्टार एक्स्प्रेस संवाददाता

पूरनपुर। अपराधो को बढ़ते देख कोतवाली पुलिस दिन रात हाईवे पर सघन चेकिंग अभियान चला रही है। मंगलवार को कोतवाली पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर तीन चोरों को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया है। और उन्हें न्यायालय भेज दिया है, बताया जा रहा है कि तीनों चोरों ने आगरा की एक दुकान से खरीदने के बहाने 60 जोड़ी पायल पूरनपुर मंगवाई थी। जिसका वजन लगभग दस किलो से अधिक चांदी का होना बताया जा रहा है।जिसकी अनुमानित कीमत आठ लाख रुपए से अधिक है। पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आरोपी आशीष, राजाराम और विपिन को मुखबिर की सूचना पर नगर के एलआईसी के सामने से गिरफ्तार कर लिया है। बताया जा रहा है कि तीनों आरोपी व्यापारी का आने का इंतजार काफी समय से कर रहे थे।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय के शिक्षा संकायाध्यक्ष नामित हुए प्रो. अजय कुमार दुबे

जौनपुर टी डी पी जी कॉलेज जौनपुर के शिक्षक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.अजय कुमार दुबे को वी.ब.सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के कुलपति द्वारा वरिष्ठता क्रम में शिक्षा संकायाध्यक्ष नामित किए गए हैं । प्रोफेसर दुबे की शिक्षा- दीक्षा टी डी कॉलेज जौनपुर से ही हुई है। एम.एड. अध्ययनरत रहते हुए 1997 में आपने यूजीसी द्वारा आयोजित नेट जेआर एफ परीक्षा को उत्तीर्ण किया और इसके पश्चात 1998 से टी डी कॉलेज जौनपुर में शिक्षक शिक्षा विभाग में प्रोफेसर पद रूप में कार्यरत हैं । मूल निवासी नेवढ़िया क्षेत्र के रिकेबीपुर गांव के निवासी हैं और वर्तमान में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विद्यालय में रोवर रेंजर के जनपद संयोजक भी हैं । इससे पूर्व महाविद्यालय की परीक्षा समिति में सहायक केंद्राध्यक्ष, प्राक्टोरियल बोर्ड, रोवर्स रेंजर्स , क्रीड़ा परिषद सदस्य और महाविद्यालय कीवार्षिक पत्रिका श्मंथन के मुख्य संपादक के दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं

अज्ञात कारणों के चलते घर में लगी आग, गृहस्थी जलकर खाक

ऊँचाहार, रायबरेली। मंगलवार की दोपहर बाद छिपिया गांव में अज्ञात कारणों के चलते एक घर में आग लग गई, ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया, लेकिन हजारों कीमत की गृहस्थी जलकर खाक हो गई। गाँव निवासी महेंद्र कुमार सिंह के कच्चे घर में अज्ञात कारणों के चलते आग लग गई, ग्रामीणों ने आग बुझाने का भरसक प्रयास किया लेकिन आग पर काबू नहीं पाया जा सका, जिसके बाद सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया ,लेकिन तब तक हजारों कीमत की गृहस्थी जलकर राख हो चुकी थी।

महिला ने परिवारीजनों पर लगाया मारपीट कर घर से भगाने का आरोप

ऊँचाहार, रायबरेली। छिपिया गाँव निवासी महिला ने परिवारीजनों पर मारपीट कर घर से भगाने का आरोप लगाते हुए, कोतवाली में मामले की तहरीर दी है। गाँव निवासी अंजू सिंह का कहना है कि उसके जेठ द्वारा उसे लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है और आरोप है कि मंगलवार को उसे मारपीट कर घर से भगा दिया है, पीड़िता ने कोतवाली में तहरीर देकर गुहार लगाई है। कोतवाल बालेन्दु गौतम ने बताया कि तहरीर मिली है, जांच कर आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

आयुक्त बस्ती मण्डल ने तहसील नौगढ का निरिक्षण किया

संवाददाता, सिद्धार्थनगर । नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन 2023 को सकुशल, निष्पक्ष, स्वतन्त्र एवं भयमुक्त वातावरण में सम्पन्न कराये जाने के लिए नामांकन हो रहे तहसील नौगढ़ का आयुक्त बस्ती मंडल बस्ती योगेश्वर राम मिश्र द्वारा जिला निर्वाचन अधिकारीध्जिला मजिस्ट्रेट संजीव रंजन के साथ निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान आयुक्त बस्ती मंडल बस्ती योगेश्वर राम मिश्र ने उपजिलाधिकारी नौगढ़ को निर्देश दिया कि शांतिपूर्ण नामांकन कार्य पूर्ण कराये। किसी भी प्रकार की समस्या न हो। कोविड-19 प्रोटोकाल का पालन कराये। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी नौगढ़ ललित कुमार मिश्र, प्रदीप कुमार यादव तथा अन्य संबंधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे।

विधानसभा उप निर्वाचन के दृष्टिगत ई0वी0एम0 मशीनों का किया गया रैण्डमाइजेशन

संवाददाता, मीरजापुर । जिला निर्वाचन अधिकारीध्जिला मजिस्ट्रेट दिव्या मित्तल की उपस्थिति में जनपद के एन0आई0सी0 कार्यालय में विधानसभा 395-छानबे के उप निर्वाचन-2023 के दृष्टिगत निर्वाचन कार्य में प्रयुक्त होने वाले ई0वी0एम0 मशीनों व वी0वी0 पैट का रैण्डमाइजेशन किया गया। इस अवसर पर अपर जिलाधिकरी वि0ध्ा0 शिव प्रताप शुक्ल, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी अभिषेक श्रीवास्तव, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी सहित विभिन्न राजनैतिक दल के पदाधिकारी व अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

अवैध तमन्चे के साथ पुलिस ने अभियुक्त को किया गिरफ्तार

संवाददाता, उन्नाव। थाना सफीपुर पुलिस द्वारा एक अभियुक्त को एक अवैध तमंचा 315 बोर एक जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद कर गिरफ्तार किया गया। आप को बता दे कि मंगलवार को उप निरीक्षक कल्लूराम यादव मय हमराह फोर्स द्वारा नहर पुलिया के दाहिनें किनारे वहद ग्राम गोपालपुर के पास से अभियुक्त शम्भू पुत्र मुन्ना निवासी ग्राम उनवा थाना सफीपुर जनपद उन्नाव के कब्जे से एक अवैध तमंचा 315 बोर मय एक कारतूस जिन्दा 315 बोर बरामद कर गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त उपरोक्त के विरूद्ध थाना स्थानीय पर आर्म्स एक्ट में मुकदमा पंजीकृत किया गया है।

सड़क हादसे में घायल युवती की उपचार के दौरान मौत

संवाददाता, पूरनपुर। दवा लेने गई युवती परिजनों के साथ घर वापस आ रही थी। तभी अज्ञात ट्रैक्टर ट्राली में उसे टक्कर मार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। जब तक उसे उपचार के लिए ले जाया जाता उसकी मौत हो गई। घटनाक्रम की सूचना पर परिवार में कोहराम मच गया घर के लोग काफी गमजदा है गमगीन माहौल में पीएम होने के बाद युवती का अंतिम संस्कार करवा दिया गया। थाना क्षेत्र के गांव मटेहना कॉलोनी नंबर दो निवासी सुभाष बहराइच में अपनी ससुराल के लिए गए थे यह उनके साथ उनकी बेटी कालीन उम्र 18 वर्ष गई थी जो रिश्तेदारों की तबीयत बिगड़ने के बाद उनके साथ देखभाल करने के लिए गई थी।वापस आने के दौरान उस पर अज्ञात वाहन ट्रैक्टर ट्राली ने युवती पर अनियंत्रित गति से आते हुए ट्रैक्टर चढ़ा दिया।जिसमें युवती गंभीर रूप से घायल हो गई और जब तक उसे उपचार को ले जाया जाता उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। घटनाक्रम की सूचना पर परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है। परिवार की ओर से स्थानीय थाने में तहरीर दी गई है जिस पर कार्रवाई की मांग करते हुए कहा गया है। कि जानबूझकर ट्रैक्टर चढ़ाया गया थाना प्रभारी राजेंद्र कुमार सिरोही ने बताया कि घटनाक्रम की जानकारी मेरे संज्ञान में नहीं आई है अगर ऐसा कोई घटनाक्रम हुआ है तो उसकी रिपोर्ट दर्ज कर आवश्यक कार्यवाही होनी चाहिए। पीएम होने के बाद पुलिस ने परिजनों को सब सुपुर्द कर दिया गमगीन माहौल में युवती का अंतिम संस्कार कर दिया गया है परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

चालक के दरवाजे पर खड़ी ट्राली को चोर लेकर हुए फरार

संवाददाता, पीलीभीत । थाना क्षेत्र के ग्राम बिथरा में विगत रात चोरों ने घर के बाहर खड़ी ट्रेक्टर ट्राली को अपना निशाना बनाया और ट्राली को लेकर रफूचक्कर हो गया। मोहम्मद कमर पुत्र मोहम्मद उमर निवासी मौहल्ला खेड़ा कस्बा न्यूरिया पीलीभीत का ट्रैक्टर ट्राली को बिथरा निवासी चालक कृष्ण कुमार पुत्र नेतराम चलाता है और रात को जब वह वापस आता है तो ट्रैक्टर ट्राली को अपने घर पर ही खड़ा कर लेता है हमेशा की तरह रात भी जब वह काम से वापस आया तो उसने ट्रैक्टर ट्राली को अपने घर के बाहर खड़ा कर लिया। रात में ही एक लेवर वाले ने चोरों को ट्राली ले जाते देख लिया और उसने अपने ड्राइवर को उठाया और चोरों के बारे में बताया ड्राइवर अपने परिवार वालों को लेकर चोरों का पीछा करते हुए औरिया फाटक के पास चोरों को ट्रॉली ले जाते हुए पकड़ लिया और न्यूरिया पुलिस को सूचना दी ।

डा. बी आर अंबेडकर जी पर गलत टिप्पणी व मारपीट को लेकर दलित समाज के लोगों में रोष

गलत टिप्पणी व मारपीट करने वालों के विरूद्ध रिपोर्ट दर्ज कराने को लेकर एसपी से लगाई गुहार

संवाददाता

हापुड़। हापुड़ नगर कोतवाली क्षेत्र के मौहल्ला चमरी निवासी राजा उर्फ उत्तम शर्मा पुत्र रामेश्वर मौहल्ला चमरी डिश वाले ने बाबा साहेब डा0 बी0 आर0 अम्बेडकर के लिए सोशल मिडिया पर गलत टिप्पड़ी की थी। जिससे दलित समाज के लोगों में डा0 बी0 आर0 अम्बेडकर को गलत टिप्पड़ी करने को लेकर काफी रोष था। प्रार्थी प्रशांत कुमार व दलित समाज के कुछ व्यक्ति विपक्षी राजा उर्फउत्तम शर्मा के पास

समझाने के लिये गये तो वहां पर बातों बातों में लोगों में कहा सुनी इतनी हो गई कि राजा उर्फ उत्तम शर्मा ने रविन्द्र उर्फ छोटू जाट पुत्र मगन सिंह, शानू पुत्र हरेन्द्र, शिवा पुत्र धर्मेन्द्र व आकाश राजपूत पुत्र बिरजू समस्त निवासीगण चमरी सोसाईटी को बुलाकर सभी ने प्रार्थी एवं प्रार्थी के साथ डा भीमराव अम्बेडकर के बारे में समझाने आये व्यक्तियों को जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल कर माँ बहन की गन्दी गन्दी गालिया दी तो प्रार्थी एवं अन्य लोगो ने विपक्षीगणों से इस तरह गालिया देने को मना किया तो उपरोक्त विपक्षीगण ने जान से मारने की नियत से प्रार्थी एवं अन्य लोगो पर हमला कर दिया और ईंट पत्थर बरसाने शुरू कर दिये उक्त घटना में प्रार्थी एवं अन्य लोगों को काफी गम्भीर चोटे आई है। विपक्षीगणों ने प्रार्थी एवं अन्य लोगों को धमकी दी कि सालो ढेड चमारो यहा दोबारा आये तो जान से मार देंगे। उक्त घटना में प्रार्थी एवं अन्य लोगों को काफी गम्भीर चोटे आई है प्रार्थी व समाज के लोगों ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर गलत टिप्पणी व मारपीट करने वालों के विरूद्ध हापुड़ नगर कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराने के निर्देश के साथ लोगों के इलाज के लिए सरकारी अस्पताल मेडिकल की मांग की है इस मौके पर प्रार्थी प्रशांत कुमार के साथ शिवम, ऋषि,नवीन अनिल कुमार,चिंटू, राजा निखिल, धर्मेश कुमार,सोनू सिंह व अंकित आदि लोग मौजूद रहे।

गारमेंट की दुकान में कूमल कर की चोरी

संवाददाता

हापुड़। हापुड़ थाना देहात क्षेत्र के गांव दौयमी में राष्ट्रीय सैनिक संस्था के युवा कमांड के जिला उपाध्यक्ष अनिल त्यागी की दुकानों में घनौरा निवासी शुभम पुत्र घनश्याम की के0 एस0 फैशन की गारमेंट की की दुकान है रोज की तरह दुकानदार स्वामी धनौरा निवासी ने सोमवार को दुकान का ताला खोलकर शटर ऊपर किया तो उनके होश उड़ क्योंकि दुकान में सारा सामान बिखरा हुआ था और गल्ले की धनराशि व काफी सामान चोर चोरी कर ले गये जिसकी सूचना 112 पर काल करके दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची उधर राष्ट्रीय सैनिक संस्था के जिला अध्यक्ष ज्ञानेंद्र त्यागी जिला सचिव मुकेश प्रजापति व मार्किट के मालिक व राष्ट्रीय सैनिक संस्था के युवा कमांड के जिला उपाध्यक्ष अनिल त्यागी ने मौके पर पँहुच कर चौकी प्रभारी विनोद कुमार को फोन करके सूचना दी और दुकान स्वामी शुभम ने थाना हापुड़ देहात को लिखित तहरीर देने की बात कही वही चौकी प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि बीती रात अज्ञात चोरो ने के0 एस0 फैशन की गारमेंट की दुकान की दीवार में कूमल कर लगभग एक लाख रुपये का सामान व गल्ले में रखे लगभग आठ दस हजार रुपये नकद चोरी कर ले गये और चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और जांच-पड़ताल कर चोरों को जल्द ही पकड़ लिया जाएगा।

संचारी रोग नियंत्रण व दस्तक अभियान को लेकर सीडीओ ने की बैठक

साफ-सफाई व जलभराव के कारण मच्छर जनित परिस्थितियां उत्पन्न न होने पाएं : सीडीओ

संवाददाता, हापुड़। हापुड़ मुख्य विकास अधिकारी प्रेरणा सिंह की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में संचारी रोग नियंत्रण अभियान की अंतर विभागीय बैठक संपन्न हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी द्वारा विशेष संचारी रोग नियंत्रण व दस्तक अभियान के अंतर्गत बैठक में समस्त विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिये कि जनपद में संचारी अभियान को सफ ल बनाने हेतु समुचित व्यवस्था की जाए प्रशिक्षण पूर्ण कर लिए जाएं और हॉटस्पॉट को चिन्हित करके समस्त निरोधात्मक कार्यवाही संपन्न कराई जाए स उन्होंने बताया कि दस्तक अभियान 17 अप्रैल से 30 अप्रैल तक चलाया जाना है, जिसमें स्वास्थ्य नगर विकास पंचायती राज,

पशुपालन, बाल विकास, शिक्षा चिकित्सा, दिव्यांग, जन सशक्ति करण, कृषि एवं सिंचाई सूचना विभाग, उद्यान विभाग रोग नियंत्रण हेतु संयुक्त रूप से कार्य करेंगे। भीड़भाड़ वाले स्थानों पर जनमानस के लिए शुद्ध पेयजल की व्यवस्था की जाएगी। बुखार के रोगियों की तलाश की जाएगी तथा नगर व क्षेत्र में साफ-सफाई की व्यवस्था होगी। सीडीओ ने नगर पालिका/नगर पंचायत और पंचायती राज विभाग को निर्देशित किया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक साफ-सफाई रखी जाए ताकि कहीं भी जलभराव के कारण मच्छरजनित परिस्थितियां उत्पन्न न होने पाएं। उन्होंने सभी विभागों को निर्देशित किया कि निर्धारित गतिविधियों को समय से संपादित करें। मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देश दिये कि नालियों की सफाई, जल-जमाव हटाये एवं एंटी लार्वा का छिड़काव कराये। बीएसए को निर्देश दिया कि विद्यालयो में जागरूकता के कार्यक्रम कराये जाए और ब्लॉक स्तरीय ग्राम प्रधान एवं ग्राम विकास अधिकारी बैठक कर ब्लॉकवार योजना बनाएं स बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सुनील कुमार त्यागी ने बताया कि दस्तक अभियान में आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता घर-घर जाकर बुखार के मरीजों, इंफ्लुएंजा लाइक इलनेस के रोगियों, क्षय रोग के लक्षणयुक्त व्यक्तियों एवं कुपोषित बच्चों की सूची बनाएंगी।

जय जस्ट चिल कैफे एंड रेस्टोरेंट का भव्य शुभारंभ

संवाददाता, कानपुर। किदवई नगर स्थित के ब्लॉक मे जस्ट चिल कैफे एंड रिस्ट्रो का उद्घाटन हुआ कार्यक्रम के दौरान राहुल सचान ने बताया कि हमारे नवनिर्मित रेस्टोरेंट का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय महिला निशानेबाज पूनम पंडित जी के कर कमलों द्वारा फीता काटकर किया गया इसके उपरांत हम लोगों के द्वारा मुख्य अतिथि का माला पगड़ी पहनाकर उनका स्वागत किया गया सभी का अभिवादन करते हुए उन्होंने नए प्रतिष्ठान की शुभकामनाएं भेंट की राहुल सचान ने बताया कि हमारे रेस्टोरेंट्स में फैमिली के लोगों के लिए विशेष सुविधा उपलब्ध है जैसे कि स्वच्छ वातावरण और घर जैसा स्वाद हमारे यहां सभी अनुभवी शेफ के द्वारा शुद्ध शाकाहारी व्यंजन परोसे जाते हैं और सभी प्रकार के भारतीय व्यंजन सॉफ्ट ड्रिंक उपलब्ध है लोगों से कहना चाहूंगा वह एक बार आए और स्वादिष्ट व्यंजन का आनंद उठाएं इस दौरान मुख्य रूप से मुख्य अतिथि पूनम पंडित आशनी विकास अवस्थी कांग्रेस महापौर प्रत्याशी राहुल सचान रजत सचान अभिषेक केसरवानी पंकज राघवेंद्र अरविंद आशू ललित क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा ने आदिल सिद्दीकी को बनाया हापुड़ नगर पालिका निकाय चुनाव प्रभारी

संवाददाता, हापुड़। हापुड़ के कोटला निवासी भाजपा नेता आदिल सिद्दीकी को भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा पश्चिम उत्तर के क्षेत्रीय अध्यक्ष जावेद मलिक ने हापुड़ नगर पालिका निकाय चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। वही क्षेत्रीय अध्यक्ष जावेद मलिक ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा पश्चिम उत्तर प्रदेश में नगर निकाय चुनाव में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा पश्चिम क्षेत्र की ओर से हापुड़ निवासी आदिल सिद्दीकी को हापुड़ नगर पालिका का चुनाव प्रभारी घोषित किया है जो अपने आवंटित क्षेत्र की नगर निगम, नगर पालिका परिषद एवं नगर पंचायत में जाकर भाजपा के पक्ष मे अल्पसंख्यक मतदाताओं को वोट देने के लिए प्रेरित करेंगे।

वार्ड 48 जनता की यही पुकार, नीलम हरी सिंह अबकी बार

संवाददाता, कानपुर। कानपुर पूर्व मंडल महामंत्री भाजपा (वार्ड 48) के हरी सिंह की पत्नी नीलम सिंह की होने वाले निकाय चुनाव में पार्षद पद के लिए दावेदारी तेज है। वरिष्ठ भाजपा नेता हरी सिंह की सामाजिक कार्यशैली एवं हंसमुंख स्वभाव से वार्ड संख्या 48 की जनता का इनके प्रति बहुत लगाव है। इस वार्ड की जनता क्षेत्र में विकास कराने के लिए इन्हे अपना नेता बनाना चाहती है। जिसकी वजह से नीलम सिंह ने वार्ड की जनता की सेवा करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। इस वार्ड सीट पर पिछले 20 वर्षों से कांग्रेस प्रत्याशी काबिज है।कांग्रेस ने चार बार से चड्ढा परिवार से पंजाबी नेता लड़ाया और उनसे बड़ा नेता कोई पंजाबी नेता बन न पाया पिछले कई वर्षों से भारतीय जनता पार्टी ने इस वार्ड सीट पर पंजाबी नेता के विरुद्ध में सुनील नारंग, देवेंद्र सब्बरवाल और नितिशा मल्होत्रा जैसे पंजाबी नेता ही उतारे हैं लेकिन कोई भी सफल नहीं हो पाया। इन सभी को इस वार्ड से मात्र 2000 वोटों के अंदर ही वोट मिल सके हैं। इसलिए वार्ड 48 की जनता इस बार बदलाव चाहती है जिसे लेकर सभी ने नीलम हरी सिंह को इस जिम्मेदारी के लिए चुना है। भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को इस पर विचार करना चाहिए।

नवयुवक कमेटी ने श्री श्याम महोत्सव का किया आयोजन

संवाददाता

शुक्लागंज,उन्नाव। मोहल्ला गायत्री नगर भातुफार्म में नवयुवक कमेटी द्वारा बाबा खाटू श्याम का महोत्सव आयोजन किया गया। भजन बाबा ने एक से एक सुंदर भजन प्रस्तुत किये। भजनों को सुनकर श्याम बाबा के भक्त नाचते व झूमते रहे। भातूफार्म में खाटू श्याम बाबा का भव्य श्रृंगार किया गया ।नवयुवक कमेटी द्वारा खाटू श्याम प्रभु का द्वितीय भजन संध्या गुणगान महोत्सव का आयोजन में बड़े-बड़े शहरों से कई प्रसिद्ध भजन गायकार भजनों की प्रस्तुति देने के लिए नवयुवक द्वारा आमंत्रित किए गए । वही कार्यक्रम में खाटू श्याम प्रभु का भव्य दरबार सजाया जाकर अलौकिक श्रंगार अखंड ज्योति, इत्र वर्षा एवं छप्पन भोग भी गये। भजन गायकों ने मधुर भजन सुनाए। छप्पन भोग बाबा के दरबार में एक से बढ़कर के प्रसाद का वितरण किया गया।अखंड ज्योति प्रज्वलित करने के बाद गणेश व हनुमान वंदना के साथ शुरू हुई गजन संध्या में गायक कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति देकर श्याम भक्तों को भक्ति रस में डुबकी लगवाई।भजन गायक सुनील स्रेही ,अमन तिवारी, प्रामांशु मिश्रा,छोटू बाजपेई,भजन गायिका किरन गुप्ता ,काजल अवस्थी,कुमारी कोमल, जय म्यूजिकल ग्रुप द्वारा प्रसिद्ध भजन गायकार सुनील स्रेही ने अपने भजनों से भक्तों को और कहते हो खाटू सब काम हो रहा है... मनमोहक भजन संध्या की शुरुआत हुई। फिर भजन गायिका किरन गुप्ता ने आ गया दर पर तेरे , भजन गायिका काजल अवस्थी रींगस पर उस मोड़ पर लेने आजा खाटू वाले सभी भजन गायक बाबा की प्रस्तुति कर रहे। आयोजक अनिल कुमार श्रीवास्तव लाला, मदन गोपाल पांडे , संदीप गुप्ता , रवि शंकर दीक्षित ,संदीप शुक्ला,पंकज दीक्षित ,मयंक श्रीवास्तव (मोनू) ,अमन श्रीवास्तव (टोनू) मोहित पांडे,शुभम सैनी छोटू ,शोभित त्रिवेदी (लाइटहाउस) ,आशीष शुक्ला ,अभय उत्कर्ष ,आदित्य, अंश मिश्रा, करन आदि रहे।

तीन वांछित चोर गिरफ्तार, 48 चमड़े के पीस बरामद

संवाददाता, शुक्लागंज, उन्नाव। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ शंकर मीणा के आदेश एवं अपर पुलिस अधीक्षक शाशी शेखर अधीक्षक एवं क्षेत्राधिकारी आशुतोष कुमार के कुशल निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम मे कोतवाली गंगाघाट पुलिस द्वारा वांछित चोर अभियुक्तों को कब्जे से 48 चमड़े के पीस बरामद कर गिरफ्तार किया गया। पुलिस के अनुसार सोमवार को उप निरीक्षक अजय कुमार शर्मा मय हमराह फोर्स द्वारा थाना गंगाघाट पर पंजीकृत मुकदमा धारा 457/380 में वांछित रवीन्द्र मिश्रा पुत्र ओमकार मिश्रा निवासी रामजानकी नगर जनपद गोरखपुर, कासिफ उर्फ रानू पुत्र स्व वकील अहमद निवासी अहमद नगर अंगूरी बाग जाजमऊ कानपुर नगर, सलमान पुत्र स्व पप्पू निवासी मकदूम शआला जाजमऊ कानपुर नगर के कब्जे से 48 चमड़े के पीस बरामद कर सुपर स्कूल मोड़ के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम मे उप निरीक्षक अजय कुमार शर्मा, का0 आदित्य कुमार, का0 अंकित कुमार, का0 रोहित यादव, का0 प्रशान्त सिह रहे।

फिलिंग परफ्यूम बार आउटलेट का भव्य शुभारंभ

संवाददाता

कानपुर। परफ्यूम के शौकीनों के लिए अब एशिया का सबसे बड़ा मॉल जो उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में स्थित जेड स्क्वायर मॉल में फर्स्ट फ्लोर पर फीलिंग परफ्यूम का का गोविंद नगर भाजपा विधायक सुरेंद्र मैथानी के द्वारा फीता काटकर किया गया भव्य शुभारंभ फिलिंग परफ्यूम ऑनर गुरप्रीत सिंह ने बताया कि फ्रांस की फिलिंग बार परफ्यूम कंपनी है प्रदेश में मेरा 16वा आउटलेट स्टोर का शुभारंभ किया गया है तथा आगे बताया कि ग्राहकों के विशेष मांग पर फिलिंग परफ्यूम कंपनी द्वारा 17वा स्टोर लखनऊ के अमौसी एयरपोर्ट पर भी खोला जाएगा ग्राहकों की डिमांड के हिसाब से कस्टमाइज करके मौसम के गर्मी सर्दी और बारिश के हिसाब से ग्राहकों को एरोमा उपलब्ध कराते हैं ग्राहकों की सुविधा को देखते हुए 16वा स्टोर कानपुर के जेड स्क्वायर मॉल में खोला गया है तथा बताया की यहां विशेष तीन फ्लेवर एक्वा, इटालिया, और लुमिनस यह तीनों फ्लेवर हमारे यहां उपलब्ध है तथा खास बात यह बताइए कि कोई भी परफ्यूम अल्कोहल बेश नहीं है प्योर हाईग्रेडेड एथेनॉल 0 प्रतिशत अल्कोहल रहित परफ्यूम है जो बॉडी में किसी भी प्रकार का कोई नुकसान नहीं पहुंचाता है तथा कानपुर वासियों से अपील की है कि एक बार हमारे इस आउटपुट स्टोर पर आकर विजिट अवश्य करें शुभारंभ अवसर पर प्रमुख रूप से कंपनी के (मार्केटिंग हेड) नौशीन मेम (ऑपरेटिव हेड) फैजान गुरप्रीत सिंह कमलदीप कौर तेजिंदर कौर अश्मित कौर आदि परिवारिक सदस्य इस शुभारंभ अवसर पर उपस्थित रहे।

शॉल्स द ग्लैम मेकअप एकेडमी का शुभारंभ हुआ

संवाददाता, कानपुर। कौशलपुरी गुमटी न 5 नियर टॉक ऑफद टाउन के पास शॉल्स द ग्लैम मेकअप स्टूडियो नेल एकेडमी का शुभारंभ को ऑपरेटिव चेयरमैन विजय कपूर की मिसेज रमन कपूर जी के द्वारा फीता काटकर शुभारंभ किया गया एकेडमी के ओनर शालू घई व अमित घई ने सभी का सम्मान पूर्वक शाल वा माला पहनाकर स्वागत किया मुख्य अतिथि विजय कपूर, रमन कपूर गेस्ट के रूप मे पूर्व विधायक सतीश निगम, संजय टंडन, पुष्पेंद्र जायसवाल, स्वदेश पचौरी, रोमी अरोरा, इंदरपाल बिले, सरबजीत, बबली, आदि लोगो ने शुभकामनाए दी।

आर्य समाज के 54 वें वार्षिकोत्सव के समापन पर भव्य लंगर का आयोजन

संवाददाता

कानपुर। आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का 54वाँ वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन के अन्तिम सब में अयि जगत ख्यालिब्ध विद्वान प. संजय याज्ञिक (मेरठ) ने कहा कि स्वामी द?यानन्द संसार के पहले व्यक्ति हैं जो संसार को एक सून में जोड़ने के लिए वेदो की ओर लौटने की उदघोषणा करके किया। वैदिक संस्कृति के बिना या उसके व्यवहार में लाए बिना एकता सम्भव नहीं है। सुप्रसिद्ध विद्वान भजनोपदेशक प0 भानु प्रकाश शास्त्री ने अपने मधुर भजनों के माध्यम से सबको मन्त्र मुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने भवनों के माध्यम से आर्य समाज का सन्देश है कि सबसे प्रति पूर्वक धर्मानुसार ईश्वर एक है। वह निराकार सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, न्यायकारी, सृष्टिकर्ता हैं। सभी को वेदों की राह पर चलने की आभायास किया। इस विषय कार्यक्रम में विशेष रूप से सोटा राम आर्य, राम की अनि, प्यारे लाल आणि जिला सभा कानपुर देश देवन्द्र अभि भगवान दास, राजा राम अभि श् सरंक्षक के प्रधान डा0 प्रकाष अधि, शंकर लाल अनि, सुबोध सिंह, विनोद गुप्ता, भूपेन्द अार्य, मत्येन्द्र प्रकार राजेय श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष एवं अनेक कमिकता उपस्थित है।

सेन्ट्रल रीजनल वर्कशॉप कर्मचारी संघ इकाई का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित

संवाददाता

कानपुर। सेन्ट्रल रीजनल वर्कशॉप कर्मचारी संघ की इकाई डा0 राम मनोहर लोहिया कार्यशाला, आजाद नगर, कानपुर में प्रान्तीय प्रतिनिधि सुरेश गौड़, तथा प्रान्तीय उपाध्यक्ष अनिल कुमार अग्निहोत्री की देख-रेख में संजय कुमार, अध्यक्ष, विवेक सिंह, क्षेत्रीय मंत्री सहित 15 पदाधिकारी एंव कार्यकारिणी सदस्य चुने गये। इसी तरह कार्यशाला शाखा के अध्यक्ष सुभाष चंद, श्याम सुधाकर पाण्डेय सहित ग्यारह पदाधिकारी कार्यकारिणी सदस्य चुने गये तथा

प्रशासनिक शाखा के संजय राजभर, अध्यक्ष दिनेश सिंह सहित ग्यारह पदाधिकारी एंव कार्यकारिणी सदस्य चुने गये। चुनावोपरान्त संगठन के प्रान्तीय संरक्षक पी0एस0 वाजपेयी द्वारा चुने गये पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण का प्रस्ताव रखा। उक्त कार्यक्रय में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे पूर्व विधायक (मजदूर नेता गणेश दीक्षित द्वारा शपथ ग्रहण कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया और अपने संबोधन में दीक्षित ने कहा कि एक जमाना था कि 1980 से 1990 के दशक में परिवहन विभाग में लगभग 60 हजार नियमित तकनीकी तथा संचालन के कर्मचारी हुआ करते थे, धीरे-धीरे परिवहन की दशा इस तरह गिरती गयी कि आज संविदा तथा बाह्य श्रत के कर्मचारी विभाग में न हो तो विभाग ही ध्वस्त हो जायेगा। भारत का सबसे बड़ा सूबा उत्तर प्रदेश जिसकी आबादी लगभग 25 करोड़ के आस-पास है और बस बेड़ा 10,000 हजार भी नहीं है, जबकि कम से कम बस बेड़ा 20,000 हजार तक होना चाहिए। संगठन के संरक्षक पी0एस0 वाजपेयी ने कहा कि संगठन पूरे प्रदेश में तकनीकी कर्मचारियों की सीधी भर्ती की माँग के साथ-साथ बसे बेडा बढायें जाने की एक संविदा कर्मचारियों को नियमित करने की मांग करेगा। सभा का संचालन प्रदेश के महामंत्री हर्ष गौतम ने किया तथा सभा में मुख्य रूप से प्रान्तीय अध्यक्ष त्रिलोकी व्यास, प्रान्तीय उपाध्यक्ष, सुरेश यादव, अनिल कुमार अग्निहोत्री, प्रान्तीय उप मंत्री रमापति त्रिपाठी, प्रान्तीय संयुक्त मंत्री रविशंकर मिश्र, अनूप कुमार कुशवाहा, शिवकुमार शर्मा, वीरेन्द्र चौधरी, अजय शुक्ला, बेचेलाल, देवेन्द्र आर्या, अजय शुक्ला राजकुमार, आदि लोग उपस्थित रहे।

CMYK

दो करोड साल से भी पहले अफ्रीका में जंगली घास के मैदानों का विकास हुआ : नया अध्ययन

एजेंसी, वाशिंगटन। मानव विकास अफ्रीका के पर्यावरण और परिदृश्य से मजबूती से जुडा हुआ है, जहां हमारे पूर्वज पहली बार अस्तित्व में आए थे। पारंपरिक वैज्ञानिक आख्यान के अनुसार, अफ्रीका कभी तट से तट तक फैले विशाल जंगलों का एक हरा-भरा रमणीय स्थल था। इन हरे-भरे आवासों में, लगभग दो करोड 10 लाख वर्ष पहले, वानरों और मनुष्यों के शुरुआती पूर्वजों ने सबसे पहले लक्षण विकसित किए-जिसमें सीधी पीठ होना भी शामिल था-जो उन्हें उनके बंदर भाइयों से अलग करता था। उलेकिन फिर, कहानी आगे बढी, वैश्विक जलवायु ठंडी और खुश्क हो गई, और जंगल सिकुडने लगे। लगभग एक करोड वर्ष पहले, घास और झाडयाँ जो शुष्क परिस्थितियों को सहन करने में सक्षम थीं, ने जंगलों की जगह पूर्वी अफ्रीका में फैलना शुरू कर दिया। सबसे पुराने होमिनिन्स, हमारे दूर के पूर्वज, जंगल के अवशेषों से बाहर निकल आए जो घास से ढके सवाना में रहने लगे। विचार यह था कि इस नए पारिस्थितिकी तंत्र ने हमारे वंश के लिए एक आमूल-चूल परिवर्तन किया, हम द्विपाद बन गए। लंबे समय से, शोधकर्ताओं ने अफ्रीका में घास के मैदानों के विस्तार को कई मानव लक्षणों के विकास से जोडघ है, जिसमें दो पैरों पर चलना, औजारों का उपयोग करना और शिकार करना शामिल है। इस सिद्धांत की प्रमुखता के बावजूद, पेलियोन्टो लॉजिकल और पेलियोक्लिमेटो लॉजिकल रिसर्च से बढते प्रमाण इसे कमजोर करते हैं। हाल के दो पत्रों में, केन्याई, युगांडा, यूरोपीय और अमेरिकी वैज्ञानिकों की हमारी बहु-विषयक टीम ने निष्कर्ष निकाला कि विकासवादी कहानी के इस संस्करण को त्यागने का समय आ गया है। एक दशक पहले, हमने शुरू किया था, जो उस समय पेलियो एन्थ्रोपोलॉजी में एक अनूठा प्रयोग थारू शुरुआती वानरों के विकास और विविधीकरण पर एक क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य बनाने के लिए कई स्वतंत्र शोध दल एक साथ शामिल हुए। पूर्वी अफ्रीकी कैटरहाइन और होमिनोइड इवोल्यूशन पर शोध के लिए लघु परियोजना, जिसे आरईएसीएचई नाम दिया गया, इस आधार पर थी कि कई स्थानों के साक्ष्य से निकाले गए निष्कर्ष व्यक्तिगत जीवाश्म साइटों से व्याख्याओं की तुलना में अधिक शक्तिशाली होंगे। हमने सोचा कि क्या पिछले शोधकर्ताओं ने पेडों के लिए जंगल को छोड दिया था। दो करोड दस लाख साल पहले युगांडा में एक वानर आज जीवित वानरों की जीवन शैली के आधार पर, वैज्ञानिकों ने परिकल्पना की है कि सबसे पहले वह घने जंगलों में विकसित हुए, जहां उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण रचनात्मक नवाचारों के कारण फल खाकर सफलतापूर्वक भोजन किया। वानरों की पीठ स्थिर, सीधी होती है। पीठ सीधी होने के कारण वानर को बंदर की तरह छोटी शाखाओं के शीर्ष पर नहीं चलना पडता है। इसके बजाय, यह विभिन्न शाखाओं को अपने हाथों और पैरों से पकड सकता है, अपने शरीर के द्रव्यमान को कई समर्थनों में वितरित कर सकता है। वानर शाखाओं के नीचे भी लटक सकते हैं, जिससे उनके संतुलन खोने की संभावना कम हो जाती है। इस तरह, वे पेड की शाखों के किनारों पर उगने वाले फलों तक पहुंचने में सक्षम होते हैं जो अन्यथा केवल छोटी प्रजातियों के लिए ही उपलब्ध हो सकते हैं। लेकिन क्या यह परिदृश्य शुरुआती वानरों के लिए सही था मोरोटो, युगांडा में दो करोड दस लाख वर्ष पुरानी साइट इस प्रश्न की जांच के लिए एक आदर्श स्थान बन गई। वहां हमारी रीच टीम ने सबसे पुराने वानर मोरोटोपिथेकस के दांतों और अन्य अवशेषों की खोज की, जहां वैज्ञानिकों को कपाल, दांत और कंकाल के अन्य हिस्सों से जीवाश्म मिले हैं। विशेष रूप से दो हडडियों ने हमें यह समझने में मदद की कि यह प्रजाति कैसे चलती है। युगांडा नेशनल म्यूजियम द्वारा दशकों पहले पाई गई एक निचली रीढ की हड्डी को पहले से ही पीठ की मांसपेशियों के लिए हड्डी के जुडाव के लिए नोट किया गया था, यह दर्शाता है कि मोरोटोपिथेकस की पीठ का निचला हिस्सा सख्त था, जो पेडों पर सीधे चढने के लिए अच्छा था। हमारी खुद की एक खोज ने इस आरोही व्यवहार की प्रमुख रूप से पुष्टि की। मोरोटो में हमें एक जीवाश्म वानर की जांघ की हड्डी मिली जो बहुत मोटी शाफ्ट के साथ छोटी लेकिन मजबूत है। इस तरह की हड्डी जीवित वानरों की विशेषता है और उन्हें ऊर्ध्वाधर धड के साथ पेडों पर चढने और उतरने में मदद करती है। हालांकि दोनों कंकाल जीवाश्म फल खाने वाले, जंगल में रहने वाले वानर परिकल्पना के अनुरूप हैं, जब हमने उसी उत्खनन परत में बंदर के निचले जबडके के टुकडे की खोज की तो हमें कुछ आश्चर्यजनक लगा। इसकी दाढ लम्बी थी, जिसमें अच्छी तरह से विकसित शियरिंग क्रेस्ट क्यूप्स के बीच थी। ये संरचना पत्तियों को काटने के लिए आदर्श हैं, लेकिन फल खाने वालों के दांतों के पुंज के विपरीत हैं। यदि वानर कंकाल अनुकूलन फल खाने के लिए वनों में विकसित हुए, तो इन लोकोमोटर सुविधाओं को दिखाने वाले सबसे पुराने वानर के दांत खाने वाले दांतों की तरह क्यों नहीं हैं ?हमारे साक्ष्य और वानर मूल के पारंपरिक आख्यान के बीच इस तरह की विसंगतियों ने हमें अन्य मान्यताओं पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित कियारू क्या मोरोटोपिथेकस वनों में रहते थे मोरोटो में पर्यावरणमोरोटोपिथेकस के निवास स्थान का पता लगाने के लिए, हमने जीवाश्म मिट्टी के रसायन विज्ञान का अध्ययन किया - जिसे पेलियोसोल्स कहा जाता है-और पौधों के सूक्ष्म अवशेषों का अध्ययन किया ताकि मोरोटो में प्राचीन जलवायु और वनस्पति का पुनर्निर्माण किया जा सके। पेड और अधिकांश झाडयाँ और गैर-उष्णकटिबंधीय घास को सी3 पौधों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जो उनके द्वारा किए जाने वाले प्रकाश संश्लेषण के प्रकार पर आधारित होता है। उष्णकटिबंधीय घास, जो एक अलग प्रकाश संश्लेषक प्रणाली पर निर्भर करती हैं, सी4 पौधों के रूप में जानी जाती हैं। महत्वपूर्ण रूप से, सी3 पौधे और सी4 पौधे अपने द्वारा ग्रहण किए जाने वाले विभिन्न कार्बन समस्थानिकों के अनुपात में भिन्न होते हैं। इसका मतलब है कि पेलियोसोल्स में संरक्षित कार्बन समस्थानिक अनुपात हमें प्राचीन वनस्पति की संरचना बता सकते हैं। हमने तीन अलग-अलग कार्बन आइसोटोप हस्ताक्षरों को मापा, प्रत्येक पौधा समुदाय पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैंरू कार्बन वनस्पति और मिट्टी के रोगाणुओं के अपघटन से उत्पन्न होता हैय प्लांट वैक्स से उत्पन्न कार्बनय और वाष्पीकरण के माध्यम से मिट्टी में कैल्शियम कार्बोनेट नोड्यूल बनते हैं। हालांकि प्रत्येक प्रॉक्सी ने हमें थोडा अलग विचार दिया, लेकिन वे एक ही उल्लेखनीय कहानी में परिवर्तित हो गए।

मोरोटो एक बंद वन निवास स्थान नहीं था, बल्कि एक अपेक्षाकृत खुला वुडलैंड वातावरण था। यही नहीं, हमें प्रचुर मात्रा में सी4 पौधे बायोमास - उष्णकटिबंधीय घास के प्रमाण मिले हैं। यह खोज एक रहस्योद्घाटन थी। सी4 घास प्रकाश संश्लेषण के दौरान सी3 पेडों और झाडयों की तुलना में कम पानी खोती है। आज, सी4 घासें मौसमी शुष्क सवाना पारिस्थितिक तंत्रों पर हावी हैं जो आधे से अधिक अफ्रीका को कवर करती हैं। लेकिन वैज्ञानिकों ने यह नहीं सोचा था कि मोरोटो में मापा गया सी4 बायोमास का स्तर अफ्रीका में दस लाख साल पहले तक विकसित हुआ था। हमारा डेटा बताता है कि यह दो करोड 10 लाख साल पहले दो बार हुआ था। हमारे सहयोगियों कैरोलीन स्ट्रोमबर्ग, ऐलिस नोवेलो और राहाब किन्यानजुई ने मोरोटो में सी4 घास की प्रचुरता की पुष्टि करने के लिए साक्ष्य की एक और पंक्ति का उपयोग किया। उन्होंने फाइटोलिथ्स, पौधों की कोशिकाओं द्वारा बनाए गए छोटे सिलिका निकाय, का विश्लेषण किया जो पेलियोसोल में संरक्षित हैं। उनके परिणामों ने इस समय और स्थान के लिए एक खुले वुडलैंड और जंगली चरागाह वातावरण का समर्थन किया। एक साथ लिया गया, यह साक्ष्य नाटकीय रूप से बंदरों की उत्पत्ति के पारंपरिक दृष्टिकोण का खंडन करता है - कि वानरों ने वन कैनोपी में फलों तक पहुंचने के लिए सीधा धड विकसित किया। इसके बजाय, मोरोटोपिथेकस, जो सबसे पहले ज्ञात वानर थे, जो सीधी पीठ के साथ थे, पत्तियों का सेवन करते थे और घास वाले क्षेत्रों के साथ एक खुले जंगल में बसे हुए थे।

यूक्रेन संघर्ष के किसी पक्ष को हथियारों का निर्यात नहीं करेंगे चीन

एजेंसी, बीजिंग। चीन के विदेश मंत्री छिन कांग ने कहा कि उनका देश यूक्रेन संघर्ष में शामिल किसी भी पक्ष को हथियार नहीं बेचेगा और असैन्य एवं सैन्य उपयोग वाली वस्तुओं के निर्यात को नियंत्रित करेगा। अमेरिका और अन्य देशों ने इस बात को लेकर चिंता जताई है कि चीन रूस को सैन्य सहायता मुहैया कराने पर विचार कर रहा है। कांग ने इन्हीं चिंताओं के मद्देनजर यह बात की। चीन औपचारिक रूप से कहता रहा है कि वह यूक्रेन संघर्ष को लेकर तटस्थ है, लेकिन उसने राजनीतिक रूप से रूस का समर्थन किया है। कांग ने संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के लिए बातचीत को संभव बनाने में मदद करने की इच्छा दोहराई और कहा कि सभी पक्षों को ''वस्तुनिष्ठ और शांत'' रहना चाहिए। चीन आईं जर्मनी की विदेश मंत्री अन्नालेना बेयरबॉक के साथ संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कांग ने क्षेत्रीय तनाव बढाने के लिए ताइवान सरकार को जिम्मेदार बताया।

बीजिंग ताइवान पर अपना दावा करता है और उसने इस द्वीप को डराने की कोशिश के तहत वृहद स्तर पर सैन्य अभ्यास किए हैं। कांग ने कहा, ''सैन्य सामग्रियों के निर्यात के मामले में चीन विवेकपूर्ण और जिम्मेदार रवैया अपनाता है।'' बेयरबॉक की इन चिंताओं को स्पष्ट रूप से खारिज करते हुए कहा कि ताइवान ''चीन का आंतरिक मामला है।'' उन्होंने कहा, ''ताइवान की स्वतंत्रता एवं शांति साथ-साथ नहीं हो सकती।''

उन्होंने कहा, ''चीन संघर्ष के संबंधित पक्षों को हथियार प्रदान नहीं करेगा और कानूनों एवं नियमों के अनुसार दोहरे उपयोग वाली वस्तुओं के निर्यात का प्रबंधन और नियंत्रण करेगा।'' इस बीच, बेयरबॉक ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के एक स्थायी सदस्य के रूप में चीन की संघर्ष समाप्त करने में मदद करने की विशेष जिम्मेदारी है। उन्होंने ताइवान जलडमरूमध्य में तनाव का भी उल्लेख किया और कहा कि इस क्षेत्र में संघर्ष एक वैश्विक आपदा बन जाएगा। चीनी विदेश मंत्री ने एवं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अन्य वक्ताओं के साथ भारत एवं दुनिया में महिलाओं के विकास एवं सशक्तीकरण पर चर्चा की। सीतारमण ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा, '' हम फिलहाल महिलाओं

विश्व बैंक के अध्यक्ष ने महिला सशक्तीकरण की दिशा में भारत के प्रयासों की तारीफ की

एजेंसी, वाशिंगटन। महिला सशक्ती करण के मोर्चे पर दुनिया के ऊंची छलांग लगाने का दावा करते हुए विश्व बैंक के अध्यक्ष डेविड मालपास ने भारत खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों की तारीफकी और कहा कि इसमें उनकी ''गहरी दिलचस्पी है।'' यहां विश्व बैंक के वसंत सम्मेलन के मौके पर उसके द्वारा 'उद्यमियों एवं नेताओं के रूप में महिलाओं के सशक्तीरण' विषय पर आयोजित परिचर्चा में हिस्सा लेते हुए मालपास के लिए जो कुछ भी कर रहे हैं, हमें उन्हें जारी रखना चाहिए।'' उन्होंने उन सभी कदमों के बारे में विस्तार से बताया, जिन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नीत सरकार ने भारत में महिलाओं के आर्थिक सशक्तीरकण के लिए उठाया है। मालपास ने भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों की तारीफ की। भारत में विश्व बैंक का व्यापक कार्यक्रम है। मालपास ने कहा, '' प्रधानमंत्री (नरेंद्र मोदी) की (महिला सशक्तीकरण में) गहरी दिलचस्पी है और वह इस मुद्दे को आगे बढघ रहे हैं।'' उन्होंने कहा कि महिलाएं संवाद करने में सक्षम हों, उनका बैंक गये बिना ही डिजिटल लेन-देन करना बहुत बडा सशक्तीकरण है।

सीतारमण ने कहा, '' मैं आपको भारत में चल रहे कौशल विकास कार्यक्रमों का उदाहरण दूंगी, जो भारत में हो रहा है। यदि सौ लोगों को प्रशिक्षण दिया जाता है और उन्हें ऐसे कौशलों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जो रोजगार के लिये उपयोगी है और जिनमें तत्काल भर्ती की संभावना होती है, तो उनमें से जिन लोगों की भर्ती की जाती है, उनमें से 68 फीसद महिलाएं होती हैं।'' उन्होंने कहा, '' इससे यह स्पष्ट होता है कि जब महिलाओं के हाथों में हुनर आ जाता है, तो महिलाएं आगे की छलांग लगाने के लिए कितना तैयार हो जाती हैं।'' उन्होंने कहा, '' इसलिए हमें महिलाओं को कुशल बनाने/उन्हें कौशल प्रदान करने में निवेश करना है तथा विधायी सहयोग ऐसी चीज है, जो भारत जैसे देशों में बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, हमारे यहां महिलाओं के लिए 12 सप्ताह का वैतनिक मातृत्व अवकाश था, जिसे हमने अब बढाकर 26 हफ्ते कर दिया है, यानी 26 सप्ताह तक आपको पूर्ण वेतन मिलता है, आप अपने मातृत्व दायित्वों का निर्वहन कर सकती हैं और अब तो हमारे यहां पितृत्व अवकाश भी दिया जा रहा है।'

एचडीएफसी बैंक का मार्च तिमाही में शुद्ध लाभ 20 प्रतिशत बढ़कर 12,594 करोड़ रुपये पर

एजेंसी, मुंबई। निजी क्षेत्र के एचडीएफसी बैंक का मार्च तिमाही में शुद्ध लाभ 20.6 प्रतिशत बढ़कर 12,594.47 करोड़ रुपये रहा। बैंक ने शनिवार को वित्त वर्ष 2022-23 की चौथी एवं अंतिम तिमाही के वित्तीय नतीजे जारी करते हुए यह जानकारी दी। पिछले साल की समान अवधि में बैंक का शुद्ध लाभ 10,443.01 करोड़ रुपये रहा था। हालांकि अक्टूबर-दिसंबर, 2022 तिमाही की तुलना में एचडीएफसी बैंक का शुद्ध लाभ घट गया है जो तीसरी तिमाही में 12,698.32 करोड़ रुपये था। समूचे वित्त वर्ष 2022-23 में इस निजी बैंक ने 45,997.11 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जबकि वित्त वर्ष 2021-22 में यह 38,052.75 करोड़ रुपये था। बैंक का एकल आधार पर शुद्ध लाभ 19.81 प्रतिशत वृद्धि के साथ 12,047.45 करोड़ रुपये हो गया। एकल आधार पर इसकी कुल आय बढ़कर 53,850 करोड़ रुपये हो गई, जबकि इससे पिछले साल यह 41,086 करोड़ रुपये रही थी। ऋण घाटों और अन्य मदों में कुल प्रावधान जनवरी-मार्च, 2023 तिमाही में 2,685.37 करोड़ रुपये रहा, जो जनवरी-मार्च, 2022 तिमाही में 3,312.35 करोड़ रुपये रहा था। सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) अनुपात मार्च के अंत में 1.12 प्रतिशत रहा जबकि मार्च 2022 के अंत में यह 1.17 प्रतिशत और दिसंबर तिमाही में 1.23 प्रतिशत रहा था।

नये मूल्य निर्धारण मानदंड से घटेगी गैस उत्पादकों की आय : एसएंडपी

एजेंसी, देश की नयी गैस मूल्य निर्धारण व्यवस्था से ओएनजीसी और ऑयल इंडिया लिमिटेड जैसी गैस कंपनियों की आय घटेगी। एसएंडपी रेटिंग्स ने शुक्रवार को यह बात कही। हालांकि, नये मानदंड कठिन क्षेत्रों से उत्पादित गैस की कीमतों को प्रभावित नहीं करेंगे। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड जैसी कंपनियां इस तरह के क्षेत्रों का संचालन करती हैं। सरकार ने छह अप्रैल, 2023 को नये दिशानिर्देशों की घोषणा की थी। इसके तहत सरकार घरेलू स्तर पर उत्पादित गैस की कीमतें मासिक आधार पर तय करेगी। यह दर पिछले महीने में भारतीय क्रूड बास्केट

(भारत द्वारा आयातित कच्चे तेल की औसत कीमत) का 10 प्रतिशत होगी। सरकार ने गैस कीमत के लिए चार अमेरिकी डॉलर प्रति 10 लाख ब्रिटिश थर्मल यूनिट (यूनिट) की निचली सीमा और 6.5 डॉलर प्रति यूनिट की ऊपरी सीमा भी तय की। एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स की साख विश्लेषक श्रुति जटाकिया ने कहा, हमें उम्मीद है कि नये गैस मूल्य निर्धारण मानदंडों से कीमतों में अधिक तेजी से संशोधन होंगे। इससे पहले कीमतों की छह महीने में एक बार समीक्षा की जाती थी। एसएंडपी ने एक बयान में कहा, निचली मूल्य सीमा का मतलब है कि ओएनजीसी अपने गैस उत्पादन पर कम से कम चार डॉलर प्रति यूनिट का मूल्य हासिल कर सकेगी, भले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतिक गैस की कीमतें ऐतिहासिक रूप से कम हो जाएं। इसी तरह कीमतों की ऊपरी सीमा ओएनजीसी के लिए आय में वृद्धि सीमित करेगी। खासतौर से मौजूदा बढ़ी हुई कीमतों के बीच ऐसा देखने को मिलेगा।

ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार का 23 अप्रैल से जयपुर में होगा आयोजन

एजेंसी, विदेश से भारत आने वाले पर्यटकों के लिए अग्रणी कारोबार नेटवर्किंग मंच ग्रेट इंडियन ट्रैवल बाजार (जीआईटीबी) का 12वां संस्करण 23 से 25 अप्रैल तक जयपुर में आयोजित होगा। यह आयोजन कोविड-19 महामारी के कारण तीन साल के अंतराल के बाद हो रहा है। जीआईटीबी का आयोजन केंद्र सरकार और राजस्थान के पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से उद्योग मंडल फिक्की कर रहा है। राजस्थान के पर्यटन मंत्री विश्वेंद्र सिंह ने कहा कि महामारी के झटके का सामना करने के बावजूद राजस्थान सरकार ने पर्यटन और आतिथ्य को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिससे राज्य में इस क्षेत्र के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्र को उद्योग का दर्जा दिया है और विपणन एवं अधोसंरचना हेतु पर्यटन विकास कोष हेतु 1500 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार के इन कदमों से निवेशक आकर्षित हुए हैं। अंतर्राष्ट्रीय मार्ट इस विशाल बाजार में 300 बूथ स्थापित करने वाले 290 भारतीय प्रदर्शकों का गवाह बनेगा। इस दौरान कारोबारों की करीब 11,000 बैठकें होंगी। एक बयान के मुताबिक, जीआईटीबी के आयोजन के बाद टूर ऑपरेटरों को जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, भरतपुर और सवाई माधोपुर सहित विभिन्न पर्यटक स्थलों के दौरे पर ले जाया जाएगा।

म्यांमार में बम विस्फोट, 4 की मौत, 11 घायल

एजेंसी, यांगून । म्यांमार के राज्य प्रशासन परिषद की सूचना टीम ने कहा कि पूर्वी म्यांमार के शान राज्य में एक बम विस्फोट में चार लोगों की मौत हो गई और 11 अन्य घायल हो गए। यह घटना उत्तरी शान राज्य के लशियो शहर में एक पार्क के पास एक कार पार्किंग में हुई, जो स्थानीय समयानुसार (0515 जीएमटी) सुबह लगभग 11.45 बजे एक शिवालय के सामने स्थित है। इसमें कहा गया है कि पारंपरिक थिंग्यान जल उत्सव की पूर्व संध्या पर बम हमला एक हस्तनिर्मित विस्फोटक उपकरण से किया गया था। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, पीड़ित शिवालय के तीर्थयात्री थे और घायलों में एक तीन साल का बच्चा भी शामिल है। घायलों को इलाज के लिए लाशियो अस्पताल भेजा गया है। एक स्थानीय पुलिस अधिकारी ने बताया कि यांगून क्षेत्र के थाकेटा टाउनशिप में गुरुवार को एक और बम विस्फोट हुआ और इस विस्फोट में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। अपराधियों का पता लगाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है।

क्रिप्टो पर वैश्विक कानून बनाने की मांग

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा- तुरंत ध्यान देने की जरूरत, जी20 देशों ने जताई सहमति

डिजिटल सार्वजनिक ढांचे की संरचना समावेशी, विकास को मिलती है तेजी : सीतारमण

एजेंसी, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जी20 वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के साथ विचार-मंथन सत्र के दौरान क्रिप्टो संपत्ति से संबंधित मुद्दों पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर दिया है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के मुख्यालय में मैक्रोफाइनेंशियल इम्प्लीकेशंस ऑफ क्रिप्टो एसेट्स शीर्षक वाला सत्र हुआ और इसमें वैश्विक विशेषज्ञों ने भाग लिया। सीतारमण ने जी20 देशों के वर्तमान वार्षिक अध्यक्ष के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने अर्थव्यवस्था को नुकसान से बचाते हुए क्रिप्टो क्षेत्र को विनियमित करने के महत्व को चिन्हित किया। मंत्री ने क्रिप्टो संपत्ति से संबंधित नीति और नियामक ढांचे के प्रमुख तत्वों को सामने लाने में आईएमएफऔर वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) के काम को स्वीकार किया। उन्होंने क्रिप्टो परिसंपत्तियों पर विश्व स्तर पर समन्वित नीति प्रतिक्रिया की आवश्यकता पर बल दिया। सीतारमण ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि समूह ने तत्परता के साथ इस मुद्दे पर प्रतिक्रिया दी है और जी20 की भारत की अध्यक्षता के दौरान, क्रिप्टो संपत्ति से संबंधित मामलों पर एक 'संश्लेषण पत्र' लाया जाएगा जो भिन्न विचारों की अभिव्यक्ति करेगा।

उन्होंने कहा, ''मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि जी20 के सदस्यों के बीच इस बात को लेकर आम सहमति है कि क्रिप्टो संपत्तियों पर कोई भी कार्रवाई वैश्विक होनी चाहिए। बता दें कि भारत सरकार क्रिप्टो संपत्तियों के नियमन को लेकर काम कर रही है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी इस मांग को लगातार उठा रही है। वाशिंगटन में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक की सालाना बैठकों के अलावा निर्मला सीतारमण भारतीय बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने समूह के सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों की बैठक की सह अध्यक्षता की है। इस बैठको क्रिपटो करेंसी और उससे जुड़ी चुनौतियों के बारे में बात की गई। एजेंसी, वाशिंगटन। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने डिजिटल सार्वजनिक ढांचे (डीपीआई) के प्रारूप को समावेशी बताते हुए कहा है कि यह देशों की विकास प्रक्रियाओं को गति देने और अधिकतम लाभ पहुंचाने में मददगार हो सकते हैं। सीतारमण ने शुक्रवार को यहां मुद्राकोष की तरफ से डीपीआई पर आयोजित एक परिचर्चा में कहा कि कहा कि सरकार के साथ निजी क्षेत्र की भी भागीदारी से विकसित डीपीआई मजबूत, समावेशी, जुझारू एवं टिकाऊ आर्थिक वृद्धि हासिल करने में अहम भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों में भारत में डीपीआई ने लक्षित, त्वरित एवं सक्षम सेवा देने में बड़ा योगदान दिया है। इन डिजिटल बुनियादी ढांचों से भारत आबादी के बड़े हिस्से तक प्रत्यक्ष लाभ पहुंचाने में सफल रहा है। इस अवसर पर आईएमएफ की प्रबंध निदेशक क्रिस्टिलिना जॉर्जीवा ने कहा कि सरकारी एवं निजी क्षेत्रों के सहयोग से तैयार डीपीआई पहुंच से बाहर के लोगों तक पहुंचने के लिए विकास को बहुत तेज कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस दिशा में भारत जैसे देशों के अनुभवों से सबक लिया जा सकता है। इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकणि ने कहा कि भारत में डीपीआई के सफल होने के पीछे राजनीतिक इच्छाशक्ति एक बड़ा कारण रही है।

लाल साडी में कहर ढाती नजर आई श्रद्धा कपूर

बॉलीवुड की आशिकी गर्ल श्रद्धा कपूर इन दिनों खूब छायी हुई नजर आ रही हैं। हाल ही में काफी लम्बे समय के बाद तू झूठी में मक्कार फिल्म में बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर के साथ उनकी केमिस्ट्री को दर्शको का खूब प्यार मिला जिसके बाद से ही फिर एक बार फिर श्रद्धा ने अपने कमाल अभिनय से सबके दिलो में जगह बना ली और छा गई। हाल ही में बीती रात मुंबई में हुए जियो स्टूडियोज इवेंट में कई बॉलीवुड सितारों को आमंत्रित किया गया। जहा बॉलीवुड स्टार्स ने भी आकर इस इवेंट में चार-चाँद लगा दिए। लेकिन वही इन सबके बीच श्रद्धा की एंट्री ने सबकी नजरे उनपर ही खींच ली। लाल साडी में श्रद्धा का लुक इतना कातलाना था कि उनपर से नजर हटा पाना वहाँ खड़े हर एक इंसान के लिए मुश्किल ही था। श्रद्धा कपूर ने इस स्पेशल इवेंट में डीप नेक ब्लाउज के साथ शिमरी साड़ी पहन सारी लाइमलाइट अपनी ओर खींच ली। लोगो उन्हें उनके इस लुक के लिए काफी अप्रिशिएट करते हुए नजर आ रहे थे। साथ ही अब उनकी ये तस्वीरें इंटरनेट के गलियारों पर धड़ल्ले से वायरल हो रही हैं। और उनके फैंस उनकी जमकर तारीफों के पल बांधते हुए नजर आ रहे हैं। लेकिन आज हम श्रद्धा कपूर के चाहने वालों के लिए हम एक और खुशखबरी लेकर आए हैं जिसमे हम आपको बता दे कि अब आपकी फेवरेट एक्ट्रेस आपको फिर एंटरटेन करती नजर आने वाली हैं। जी हाँ...! जल्द ही फिल्म स्त्री का अगला पार्ट रिलीज होने जा रहा है जिसका आप सभी ने काफी लम्बे समय से इंतजार किया था। फिल्म के मैन लीड एक्टर राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर की इस हॉरर कॉमेडी फिल्म स्त्री 2 को अगले साल 31 अगस्त 2024 में रिलीज किया जाएगा जिसमे फिर एक बार आपके फेवरेट एक्टर्स आपको एंटरटेन करने के लिए साथ सिल्वर स्क्रीन पर उतरेंगे। वही बात करें श्रद्धा कपूर के इस हॉट लुक की तो इसमें उन्होंने न्यूड मेकअप के साथ वेवी हेयर स्टाइल लुक अपनाया है।

>>> बॉलीवुड <<<

जियो स्टूडियो इवेंट में ग्लैमर का तड़का लगाती दिखी सेनन सिस्टर्स

कृति के रेड लुक के हुए फैंस दीवाने तो नूपुर ने दिखाया बॉसी लुक

हाल ही में मुंबई में हुए जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में कई बॉलीवुड सितारों को स्पॉट किया गया, जहां बी-टाउन सेलेब्स को एक स्पेशल इवनिंग के लिए इनवाइट किया गया था और यह बॉलीवुड सितारों ने भी अपनी चमक से महफिल को चमकाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन इन्ही सबके बीच एक बी टाउन अभिनेत्री ने सारी मेहनफीले लूट ली। और वो एक्ट्रेस कोई और नहीं बल्कि कृति सेनन थी मैरून सेक्विन को-ऑर्ड सेट में कृति के जलवे देखने लायक थे उन्होंने इस इवेंट में एंट्री मारते ही सब लोगो को उनकी और अट्रैक्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। कृति सनोन मुंबई में श्रपव वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में एक विशेष शाम के लिए आमंत्रित की गई बॉलीवुड सेलेब्स में से एक थीं और उन्होंने भी इस शाम के लिए अपने लुक को काफी बारीकी से पसंद किया था जो उनके लुक के थ्रू दिखाई भी दे रहा था। और इस इवेंट में एक्ट्रेस अकेली नहीं बल्कि अपनी बहन नूपुर सेनन संग पहुंची थी दोनों ही बहनो ने इस शाम में अपनी खूबसूरती से खूब रंग भरे। अपने इस लुक को कृति ने बेहद ही सादगी लेकिन क्लासी लुक के साथ प्रेजेंट किया हुआ था, उन्होंने अपने बालों को साइड साइड स्टाइल किया और मिनिमल मेकअप लुक चुना जिससे उनका ज्यादा हैवी ना लगकर सिंपल लेकिन उतने ही एलिगेंट लगे। बात करे अब उनके लुक के साथ मैचिंग असोसेरिज की तो उन्होंने इसके लिए ज्यादा कुछ नहीं पहना हुआ था, बल्कि कीर्ति ने मिनिमल मेकअप और हाई हील्स के साथ अपने लुक को कंपलीट किया था जो उस शाम के लिए कही भी कम या ज्यादा नहीं दिखा। इवेंट में कृति ने रेड कार्पेट पर कैमरे के लिए जमकर पोज दिए इस दौरान साथ में खड़ी उनकी बहन नूपुर ने भी मीडिया के लिए कई पोज देकर बहन कृति का बखूबी साथ दिया और दोनों ही बहनो ने जमकर लाइमलाइट बटोरी। इवेंट में कृति अपनी बहन नुपूर के साथ पहुंची थीं, तो वही इस दौरान सेनन सिस्टर्स काफी ग्लैमरस लग रही थीं। दोनों बहनों ने कैमरे के लिए खूब तस्वीरें क्लिक कराईं और देखते ही देखते सबकी नजरे बस इन सिस्टर्स की ट्विनिंग पर ही जमी रह गई। इवेंट में कृति की बहन नुपुर बॉसी लुक को केरी किया हुआ था जो उनपर खूब जच रहा था। उन्होंने पैंट सूट पहना था जिसमे बॉसी लुक के साथ नूपुर के टशन भी उनके इस लुक को पूरा मैच कर रहे थे। एनएमएसीसी इवेंट में भी कृति ने अपने स्टाइलिश अवतार से काफी सुर्खियां बटोरी। अब बात करे कृति सेनन के वर्क फ्रंट की बात करें तो वे आखिरी बार वरुण धवन के साथ फिल्म 'भेड़िया' में नजर आई थीं। और अब जल्द ही उनकी पीरियड ड्रामा फिल्म 'आदिपुरुष' रिलीज होने वाली है। और इसके अलावा भी कृति की झोली में फिल्मो की भरमार लगी हुई हैं। वह जल्द ही पहली बार शाहिद कपूर संग सिल्वर स्क्रीन शेयर करती दिखाई देंगी। जिस फिल्म का अनटाइटल्ड पोस्टर भी तरण आदर्श द्वारा दिखाया जा चूका हैं।

डीप नैक वाले कपडे पहनने की नहीं थी इजाजत

फिल्म केकेबीकेकेजे के सेट से किया पलक तिवारी ने बड़ा खुलासा

टीवी स्टार श्वेता तिवारी की दुलारी पलक तिवारी अब अपने बॉलीवुड डेब्यू के लिए पूरी तरह तैयार हैं। फिल्म किसी का भाई किसी की जान के साथ बॉलीवुड में अपनी शुरुआत करने वाली पलक ने फिल्म से लेकर कुछ बड़े खुलासे भी किया हैं। बता दे कि ये फिल्म जल्द ही 21 अप्रैल को स्क्रीन पर आएगी। उन्होंने पहले एंटीम के सेट पर एक सहायक निर्देशक के रूप में काम किया था और अब फिल्म के जरिये सबको अपनी एक्टिंग स्किल से एंटरटेन करने आ रही हैं।लेकिन उससे पहले पलक ने अपने एक नए लेटेस्ट इंटरव्यू में फिल्म के मैन लीड एक्टर सलमान खान से जुडी कुछ बात को बताया, उन्होंने खुलासा किया कि भाई ने महेश मांजरेकर निर्देशित फिल्म के सेट पर मौजूद सभी महिलाओं को कम नेकलाइन पहनने से परहेज करने का आर्डर दिया था। उन्होंने आगे उन्हें ठीक से ढकने के लिए भी कहा। अभिनेत्री श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी सलमान खान की फिल्म अंतिम के सेट पर सहायक थीं। उसने खुलासा किया है कि सामूहिक नायक ने सभी लड़कियों को अपने सेट पर ठीक से तैयार होने के लिए कहा। उन्होंने उन्हें कम नेकलाइन न चुनने की चेतावनी भी दी।पलक ने इंटरव्यू के दौरान सिद्धार्थ कन्नन से कहा, जब मैं एंटीम पर सलमान सर के साथ विज्ञापन कर रहा था, मुझे नहीं लगता कि बहुत से लोग यह जानते हैं, सलमान सर का एक नियम था कि कोई भी लड़की मेरे सेट पे, नेकलाइन यहां होनी चाहिए (मेरे सेट पर हर लड़की के लिए, नेकलाइन यहां होनी चाहिए), सभी लड़कियों को अच्छी उचित लड़कियों की तरह ढंका जाना चाहिए। तो मेरी माँ ने मुझे उचित शर्ट, जॉगर्स और कवर और सभी में देखा। वह बोली, तुम कहाँ जा रहे हो? कैसे क्या तुमने इतने अच्छे कपड़े पहने हैं? मैंने कहा कि मैं सलमान सर के सेट पर जा रही हूं। वह वाह, बहुत अच्छा थी।पलक ने आगे कहा कि सलमान एक परंपरावादी हैं, जो अपने साथ काम करने वाली महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की कोशिश करते हैं। वह एक परंपरावादी है ... बेशक, वह जो पहनना है पहनो की तरह है, लेकिन वह हमेशा मेरी लड़कियों को हमेशा सुरक्षित रहना चाहिए की तरह है। अगर आसपास पुरुष हैं, जिन्हें वह व्यक्तिगत रूप से नहीं करती हैं। पता है, यह उनका व्यक्तिगत स्थान नहीं है जहां वह हर किसी पर भरोसा नहीं करते हैं, वह कहते हैं, लड़की को हमेशा सुरक्षित रहना चाहिए, अभिनेत्री ने कहा। किसी का भाई किसी की जान, इस बीच, 21 अप्रैल को सिनेमाघरों में खुलने के लिए तैयार है।

>>> बॉलीवुड <<<

सामंथा रुथ प्रभु ने दिया अपना हेल्थ अपडेट, फीवर के बाद खो चुकी हैं अपनी आवाज

टॉलीवुड इंडस्ट्री की टॉप मोस्ट फेवरेट एक्ट्रेस की लिस्ट में अपना नाम शुमार करने वाली अभिनेत्री सामंथा रुथ प्रभु आज किसी पहचान की मोहताज नहीं आज हर एक इंसान उन्हें उनके एक्टिंग स्किल्स के चलते बखूबी जनता हैं। अभिनेत्री ने आज जो मुकाम हासिल किया हैं वह मुकाम पाना हर एक एक्टर का सपना होता हैं। जैसा की हम सभी जानते भी हैं कि सामंथा इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म शाकुंतलम के प्रोमोशंस में काफी बिजी चल रही हैं, अपने एक रीसेंट ट्वीट में अपने स्वास्थ्य के बारे में एक अपडेट साझा करते हुए सामंथा एक बड़ी बात का खुलासा किया हैं। जिसमे उसने बताया कि उसे अपने स्वास्थ्य के कारण प्रचार कार्यक्रमों को छोड़ना होगा। ट्विटर पर समांथा ने कहा कि वह बुखार से पीड़ित हैं और व्यस्त कार्यक्रम और प्रचार ने अपना प्रभाव डाला है के कारण अपनी आवाज खो दी है। समांथा ने ट्वीट किया, (1/2) मैं इस सप्ताह अपनी फिल्म का प्रचार करने और आपके प्यार में डूबने के लिए वास्तव में उत्साहित थी। दुर्भाग्य से, व्यस्त कार्यक्रम और प्रचार ने इसका असर डाला है, और मुझे बुखार हो गया है और मेरे पास मेरी आवाज खो गई। (2/2) कृपया आज शाम एमएलआरआईटी के वार्षिक दिवस समारोह में टीम रुशाकुंतलम में शामिल हों ... आपको बहुत याद करेंगे (लाल दिल वाला इमोजी)। एक अन्य ट्वीट में उन्होंने लिखा, (2/2) कृपया आज शाम एमएलआरआईटी के वार्षिक दिवस समारोह में टीम रुशाकुंतलम से जुड़ें... आपकी बहुत याद आएगी। समांथा ने अपनी अपकमिंग फिल्म शाकुंतलम के प्रमोशन के लिए देश भर में यात्रा की है। पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, एक प्रशंसक ने कहा, अपना समय लें और ठीक हो जाएं, कृपया! एक अन्य ट्वीट में लिखा गया है, आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है.. हालांकि समय नहीं है, एक तरफ आपने शूटिंग के व्यस्त कार्यक्रम में भाग लिया और दूसरी तरफ आपने अपनी ताकत से परे प्रमोशन किया है.. ध्यान रखें आपके स्वास्थ्य के बारे में। एक तीसरी टिप्पणी पढ़ी, हम हमेशा सैम का समर्थन करने के लिए यहां हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम आपको हमेशा प्यार करते हैं। शाकुंतलम प्राचीन भारत के महानतम कवि और नाटककार कालिदास के लोकप्रिय भारतीय क्लासिक नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम पर आधारित है। शकुंतला राजा दुष्यंत की पत्नी और सम्राट भरत की माता थीं। देव मोहन को सामंथा के साथ जोड़ा गया है। फिल्म के बारे में बात करते हुए सामंथा ने कहा था, यह एक प्रेम कहानी है। और प्यार अपने आप में एक ब्रह्मांड की तरह है। हमारी सांस्कृतिक विरासत समृद्ध है। और इस फिल्म की कहानी हमारे सबसे पुराने क्लासिक्स में से एक से प्रेरित है। कहानी के अलावा, फिल्म में उच्च स्तरीय ग्राफिक्स और विशेष प्रभाव हैं।इसके अलावा, सामंथा विजय देवरकोंडा के साथ एक आगामी रोमांटिक फिल्म खुशी और वरुण धवन के साथ एक्शन थ्रिलर वेब सीरीज सिटाडेल में नजर आएंगी।

स्टार एक्सप्रेस
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र कुमार द्वारा सांई ऑफसेट प्रिन्टर्स, 40 वासुदेव भवन, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं एमजी-18, सेक्टर-सी, अलीगंज, लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। सम्पादकः नरेन्द्र कुमार। (पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा) R.N.I. No.- UPHIN/2008/24076 Email Id : starexpressnews@gmail.com